हिंदी

कक्षा VIII

केरल सरकार
शिक्षा विभाग

2015

JT 273-1/Hindi- 8

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्‌धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्‌धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala

Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi
© Department of Education, Government of Kerala

प्यारे बच्चो,

अब आपके हाथ में हिंदी की नई पाठ्यपुस्तक है। इसमें आपके पसंद की साहित्यिक विधाएँ- कहानियाँ, कविताएँ, एकांकी, लेख आदि सम्मिलित हैं, इन्हींके साथ दैनिक व्यवहार में आनेवाली कुछ व्यावहारिक विधाएँ भी हैं। इनमें से गुज़रकर हिंदी भाषा और साहित्य के बुनियादी अंशों को समझने की भरसक कोशिश करें। इकाइयों से जीवनमूल्यों का प्रतिफलन आप ज़रूर पाएँगे। उन्हें भी अपनाने का प्रयास करें।

इसी आशा के साथ,

डॉ. एस. रवींद्रन नायर
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

HINDI

CLASS VIII

TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM

Mohamed Ashraf Alungal	Irimbiliyam Govt. HSS, Malappuram
Vahid. K.P	GHSS Pang, Malappuram
Murali Krishna.G	GHSS Pottassery, Palakkad
Dr. S. Sivaprasad	GHSS Aazhchavattom, Kozhikkode
M. Venugopal	Govt. Central HS Attakulangara, Thiruvananthapuram
N.V. Somarajan	GHS Ayyankavu, Ernakulam
Abdul Razak. V.T	PTMYHSS, Edapalam, Palakkad
Abdul Raof. T.K	DUHSS Thootha, Malappuram
O. Pramod	GHSS Achoor, Wayanad
Sreela. S. Nair	IKT HSS, Cherukulamba, Malappuram
Mohanan. T.K	Govt. Sanskrit HS Charamangalam, Alappuzha

EXPERTS

Dr. H. PARAMESWARAN
Prof. M. JANARDHANAN PILLAI
Dr. N. SURESH
Dr. B. ASOK

ARTIST

C. RAJENDRAN

ACADEMIC CO-ORDINATOR

Dr. REKHA. R. NAIR

Research Officer, SCERT

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING - Kerala
Thiruvananthapuram

अनुक्रमणिका

इकाई 1

शाहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?	लोककथा
ज्ञानमार्ग	एकांकी
मैं इधर हूँ	कविता

इकाई 2

सुख-दुख	कविता
पिता का प्रायश्चित	संस्मरण
मेरे बच्चे को सिखाएँ	पत्र
उजाला	कहानी

इकाई 3

डॉक्टर के नाम मज़दूर का पत्र	कविता
बात उस मंगलवार की	डायरी
दोहे	कविता
बटेऊ	लोककथा

अनुक्रमणिका

इकाई 4

इंद्रधनुष धरती पर उतरा	चित्र-कहानी
इस बारिश में	कविता
जल-बैंक	व्यंग्य लेख
मरना	कविता

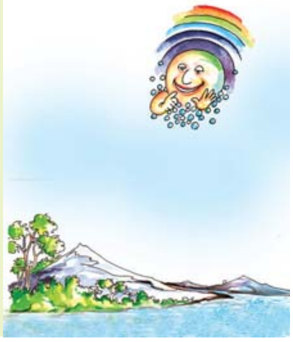

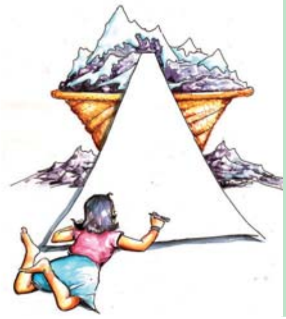

इकाई 5

सफेद गुड़	कहानी
खूबसूरत अनुभूति है एवरेस्ट !	साक्षात्कार
वह सुबह कभी तो आएगी	गीत

इकाई –1

मधुमक्खी किसके लिए मधु
संचित करती है?

लोककथा

शाहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

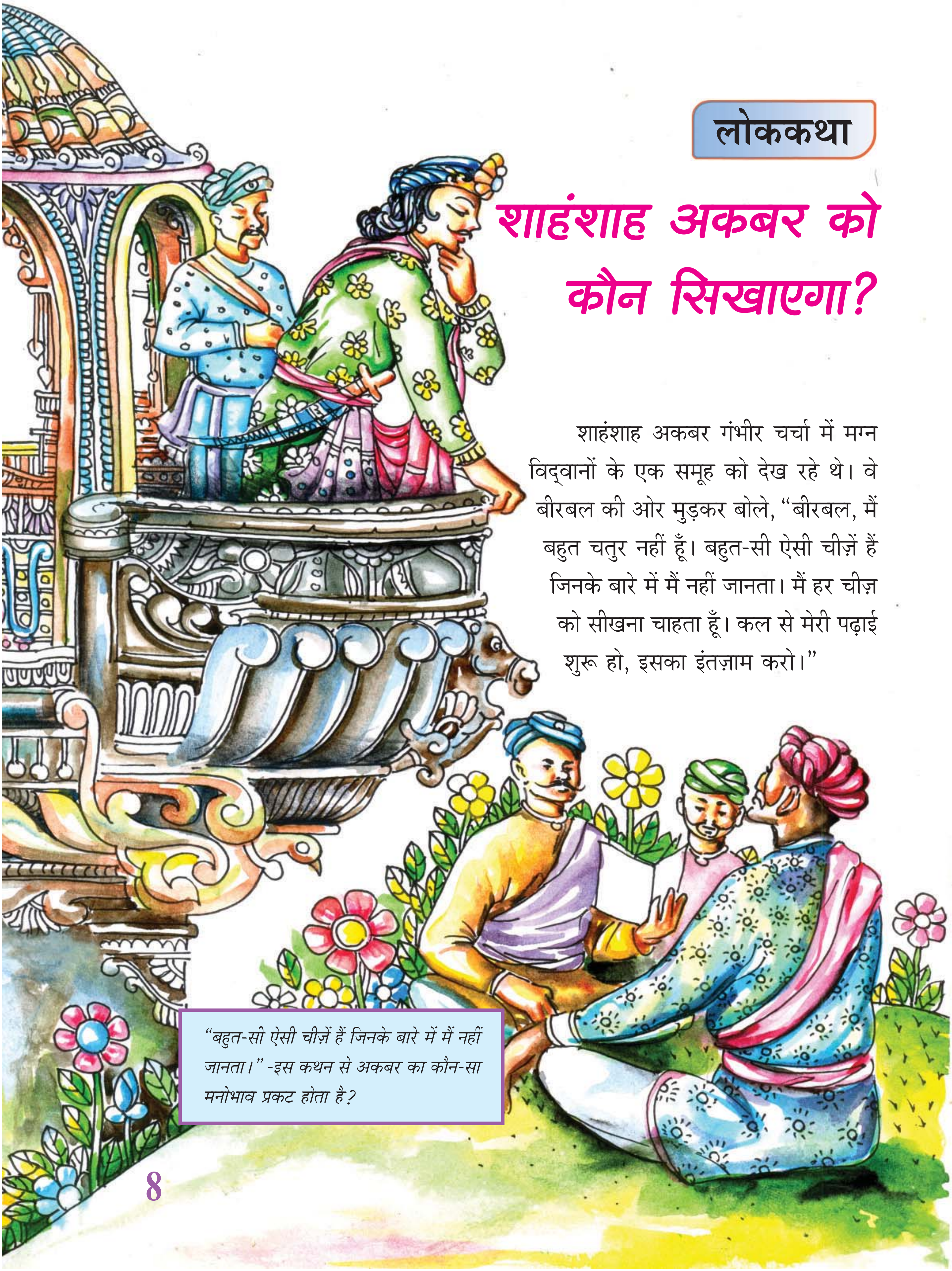

शाहंशाह अकबर गंभीर चर्चा में मग्न विद्वानों के एक समूह को देख रहे थे। वे बीरबल की ओर मुड़कर बोले, "बीरबल, मैं बहुत चतुर नहीं हूँ। बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता। मैं हर चीज़ को सीखना चाहता हूँ। कल से मेरी पढ़ाई शुरू हो, इसका इंतज़ाम करो।"

"बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता।" -इस कथन से अकबर का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

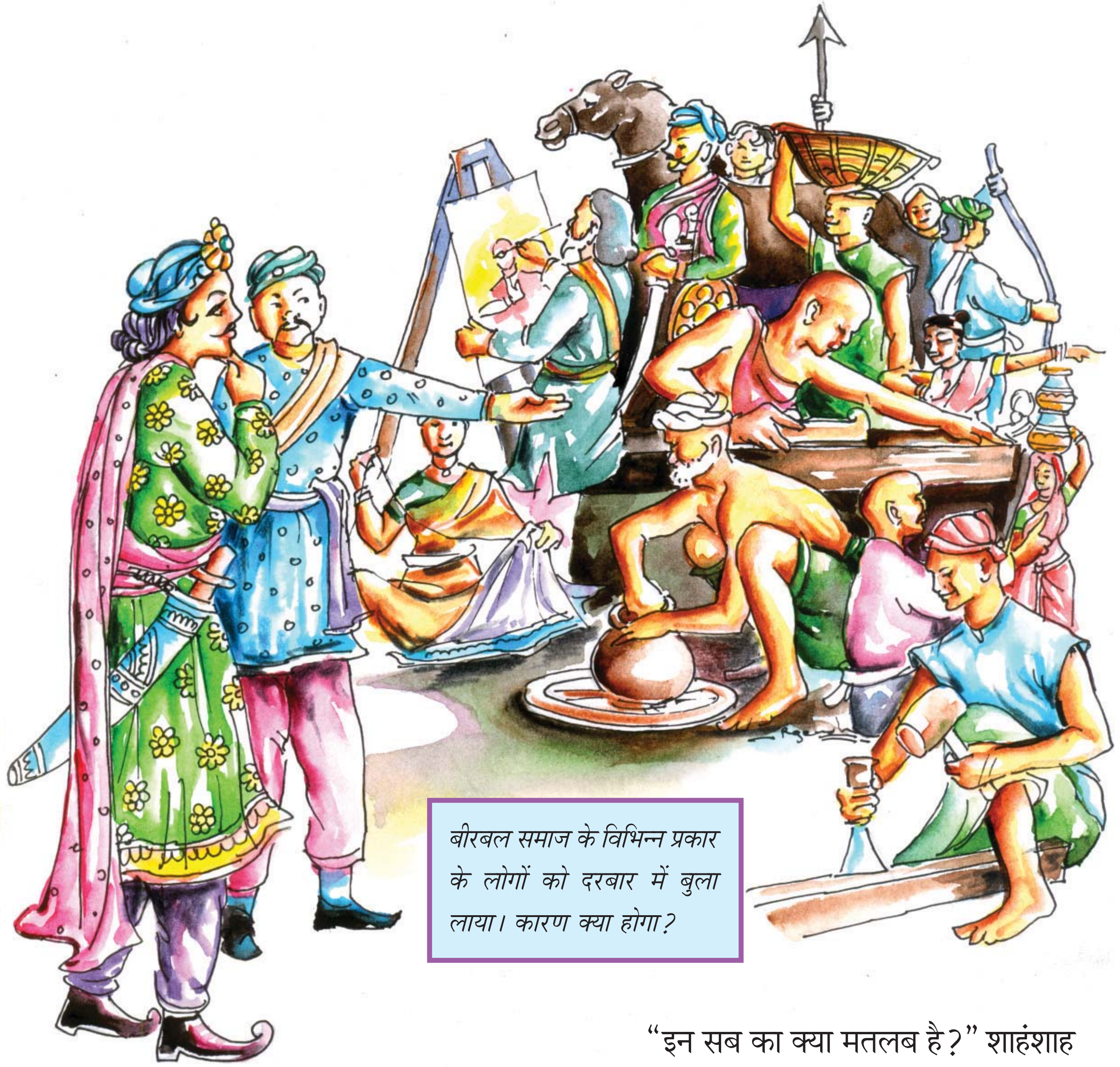

बीरबल समाज के विभिन्न प्रकार के लोगों को दरबार में बुला लाया। कारण क्या होगा?

अगली सुबह जब शाहंशाह ने दरबार में प्रवेश किया तो उनका स्वागत एक विचित्र दृश्य ने किया। दरबार तरह-तरह के लोगों से भरा हुआ था। वहाँ बच्चे और बुज़ुर्ग थे, गृहिणियाँ और धोबिनें थीं, किसान और कचरा बीननेवाले थे, दुकानदार और लिपिक थे, मूर्ख और ज्ञानी थे। और भी न जाने कितनी तरह के लोग थे।

"इन सब का क्या मतलब है?" शाहंशाह गरजे। "मैंने तुमसे ऐसे लोगों को लाने के लिए कहा था जो मुझे कुछ सिखा सकें और तुमने मेरा महल, राज्य की आधी जनता से भर दिया? अब जवाब दो!"

"माफ़ी चाहता हूँ, जहाँपनाह, मैंने तो बस, आपके आदेशों का पालन किया है।" बीरबल ने जवाब दिया। "गुस्ताखी माफ़ हो, पर क्या जहाँपनाह रेत में घंटों खेलकर अपना मनोरंजन करना जानते हैं?"

"नहीं! पर उससे क्या?" शाहंशाह बौखला गए।

"क्या आप किसी गरीब आदमी की आमदनी में घर चला सकते हैं? या क्या आप जानते हैं कि कपड़ों से दाग कैसे हटाया जाता है?"

"कतई नहीं!" शाहंशाह अकबर ने जवाब दिया।

"क्या जहाँपनाह यह जानते हैं कि बुवाई कब करनी है और फसल को पानी कब देना है? या कचरे में से उपयोगी चीज़ों को कैसे छाँटना है? या कहाँ हरे-भरे चरागाह हैं? या हमारी फसलों के बढ़िया दाम कहाँ मिलेंगे? या किसी शब्द को इतनी खूबसूरती से कैसे लिखें कि वह चित्र जैसा लगे...?"

"नहीं, नहीं, नहीं, हज़ार बार नहीं!" अकबर गुस्से से लाल-पीले होकर चिल्लाए।

"तब जहाँपनाह," बीरबल ने शांति से कहा, "इस दरबार में मौज़ूद हर शख्स आपको कुछ न कुछ सिखा सकता है। हरेक ऐसा कुछ जानता है जो दूसरों को नहीं पता है। प्रत्येक के पास कुछ हुनर है, कुछ ज्ञान है, दिल या दिमाग की कोई ख़ासियत है। तो सभी शिक्षक भी हैं और विद्यार्थी भी!"

शाहंशाह समझ गए कि बीरबल के कहने का क्या मतलब है। वे हँस दिए, "तब तो तुम भी एक विद्यार्थी हो, बीरबल? मैं तो सोचता था कि तुम्हें कोई कुछ नहीं सिखा सकता!"

"बात इससे उलट है जहाँपनाह, मैं तो हमेशा ही सीखता हूँ।" बीरबल ने उत्तर दिया।

"हमेशा ही सीखता हूँ।" -इसका क्या मतलब है?

बीरबल भीड़ की ओर बढ़े। एक बूढ़ी महिला का हाथ थामकर उन्हें शाहंशाह के सामने ले आए। "जहाँपनाह", उन्होंने कहा, "ये मेरे पहले और श्रेष्ठ गुरुओं में से हैं।"

बूढ़ी महिला ने शाहंशाह को सलाम किया और कहा, "हुज़ूर, बुद्धिमान व्यक्ति जानते हैं कि सब कुछ सीख जाना संभव नहीं है। लेकिन सब को यह सीखना चाहिए कि अच्छा इंसान कैसे बन जा सकता है।"

शाहंशाह बूढ़ी महिला के शब्दों की सादगी से प्रभावित हुए। वे उनके आगे अदब से झुके और फिर मुड़कर बीरबल से कहा, "तुम सच में भाग्यशाली हो जो तुम्हें इतनी समझदार गुरु मिलीं।"

यह बूढ़ी महिला किन-किन की प्रतिनिधि हो सकती है?

- **कहानी पढ़ी।**

  इसमें मुख्य पात्र कौन-कौन हैं और उनकी वेश-भूषा कैसी है?

  इस कहानी के कितने प्रसंग हैं? वे कौन-कौन से हैं?

- **अब इन तालिकाओं की पूर्ति करें।**

पात्र	वेश-भूषा

स्थान	समय

- **प्रत्येक प्रसंग में इस कहानी के पात्रों के बीच का संवाद क्या होगा? किसी एक प्रसंग का संवाद तैयार करें।**

- **कहानी को एकांकी के रूप में बदलकर लिखें।**

मेरी रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

रंगमंच			
रंग सज्जा का विवरण है।	☐	☐	☐
पात्र			
आयु, वेशभूषा, चाल-चलन, हाव-भाव का संकेत है।	☐	☐	☐
कथोपकथन			
संवाद पात्रानुकूल है।	☐	☐	☐
भाषा स्वाभाविक है।	☐	☐	☐

- **इन वाक्यों पर ध्यान दें–**

हर **शख्स** आपको कुछ न कुछ सिखा सक**ता है**।

हरेक ऐसा कुछ जान**ता है**।

क्या **आप** जान**ते हैं**?

मैं हर चीज़ को सीखना चाह**ता हूँ**।

मैं माफ़ी चाह**ता हूँ**।

- **ऊपर के वाक्यों का विश्लेषण करें और रेखांकित अंशों के आपसी संबंध पर चर्चा करें।**

पोल खुल गया...!

पगड़ी में कौन-सा पोल छिपा था?

ज्ञानमार्ग

एकांकी

असगर वज़ाहत

(तीन राजकुमार गुरुकुल में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद घर लौट रहे हैं। तीनों घने जंगल से गुज़र रहे हैं।)

राजकुमार 1: हम तीनों इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि हमने ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

राजकुमार 2: संसार में कितने कम लोगों को यह सौभाग्य प्राप्त होता है।

राजकुमार 3: पर हम सबका ज्ञान बराबर नहीं है।

राजकुमार 1: क्या मतलब है तुम्हारा?

राजकुमार 3: मेरा ज्ञान तुम दोनों के ज्ञान से अधिक है।

राजकुमार 1: कैसी मूर्खतावाली बातें कर रहे हो। मैं तुम दोनों से बड़ा हूँ। मेरे ही पास ज़्यादा ज्ञान है।

राजकुमार 2: मैं तो गुरुकुल आने से पहले भी पढ़ता था। मेरा ज्ञान तुम दोनों से ज़्यादा है।

राजकुमार 1: मेरे पिता बहुत बड़े ज्ञानी हैं। उनका पुत्र होने के नाते मैं तुम दोनों से ज़्यादा विद्वान हूँ।

राजकुमार 2: पिता से क्या होता है? मेरी तो माता जी देश की मानी हुई विदुषी हैं... मैं उनके पेट में नौ महीने रहा हूँ... तुम दोनों मेरा मुकाबला नहीं कर सकते।

राजकुमार 3: मेरे घर के सेवक तक महापंडित हैं... तुम दोनों मेरे आगे मूर्ख हो।

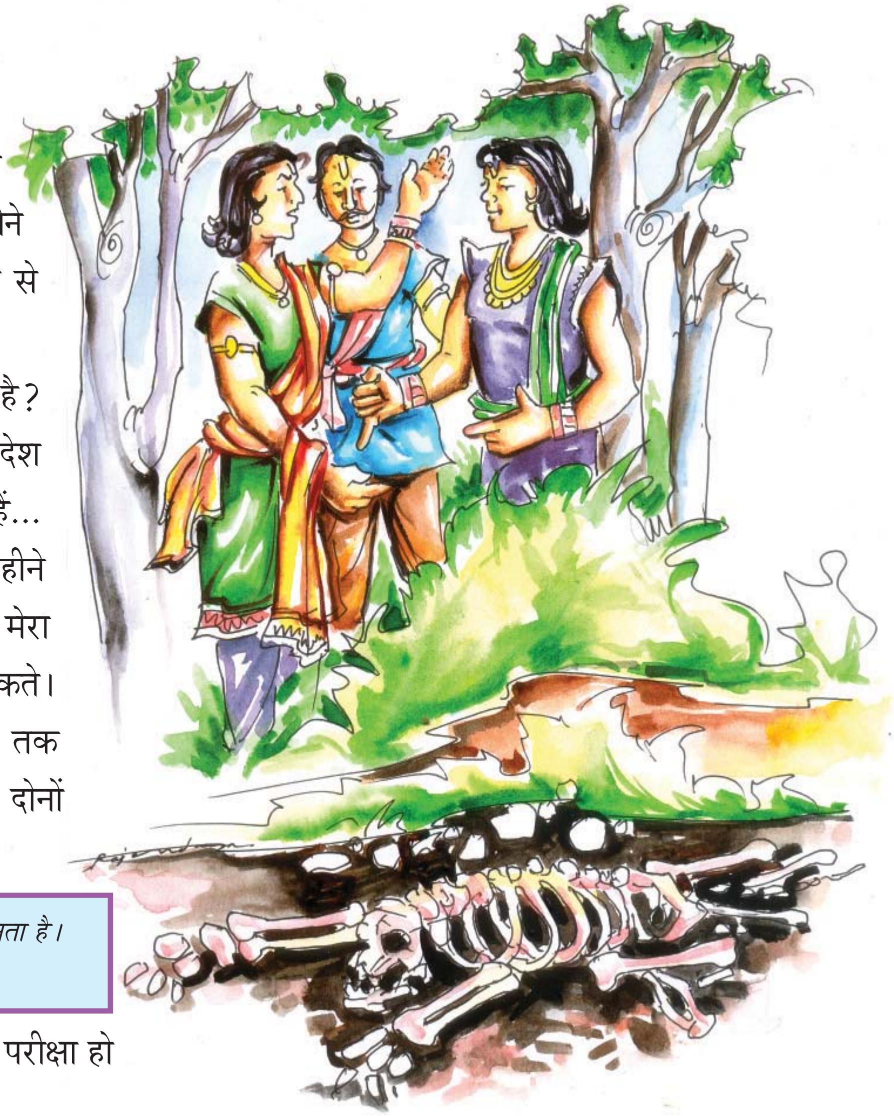

हर राजकुमार अपने को बड़ा ज्ञानी मानता है। असल में बड़ा ज्ञानी कौन है?

राजकुमार 1: यही बात है तो चलो परीक्षा हो जाए।

राजकुमार 3: यही बात है तो तुम अपने ज्ञान का परिचय दो।

राजकुमार 2: ज्ञान का परिचय ज्ञानी को दिया जाता है मूर्खों को नहीं।

राजकुमार 3: तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

राजकुमार 1: अपने ज्ञान का परिचय दो नहीं तो हम तुम को दंड देंगे।

(राजकुमार 2 इधर-उधर देखता है। उसे किसी जानवर की हड्डियाँ पड़ी दिखाई देती हैं।)

राजकुमार 2: ये हड्डियाँ देख रहे हो?

राजकुमार 1: हाँ।

राजकुमार 2: मैं अपने ज्ञान से बता सकता हूँ कि ये हड्डियाँ शेर की हैं।

राजकुमार 3: बस यह तो मामूली बात है। मैं तो अपने ज्ञान से इन हड्डियों पर माँस, उनमें रक्त और उसके ऊपर खाल मढ़ सकता हूँ। लो, मैं मंत्र पढ़ता हूँ।

(राजकुमार 3 मंत्र पढ़ता है और शेर की हड्डियों पर माँस, उनमें रक्त और उसके ऊपर खाल आ जाती है।)

राजकुमार 1: अरे हाँ... यह तो हो गया।

राजकुमार 3: मूर्खो... अब तो तुम समझे... मैं तुम सबसे बड़ा विद्वान हूँ।

राजकुमार 1: लेकिन क्या तुम इसमें प्राण भी डाल सकते हो?

राजकुमार 3: नहीं... पर यह तो तुम भी नहीं कर सकते।

राजकुमार 1: मैं इसमें प्राण भी डाल सकता हूँ।

राजकुमार 2: पर ऐसा मत करना।

राजकुमार 1: क्यों?

राजकुमार 2: उसके बाद शेर हमें खा जाएगा।

राजकुमार 1: पर मुझे तो सिद्ध करना है कि मैं तुम दोनों से बड़ा ज्ञानी हूँ।

राजकुमार 3: नहीं नहीं... शेर हमें खा जाएगा।

(राजकुमार 1 मंत्र पढ़ता है और शेर जीवित हो जाता है। शेर दहाड़कर उनकी तरफ़ बढ़ता है। वे बचने की कोशिश करते हैं।)

राजकुमार 2: अब हम बच नहीं सकते।

राजकुमार 3: शेर हमें खा ही जाएगा।

राजकुमार 2: अरे, वह देखो, कौन आ रहा है?

राजकुमार 3: अरे, वह तो गुरुजी हैं।

(गुरुजी पास आ जाते हैं।)

राजकुमार 2: गुरुजी हम लोग संकट में पड़ गए हैं।

"गुरुजी हम लोग संकट में पड़ गए हैं।" -राजकुमार क्यों संकट में पड़े?

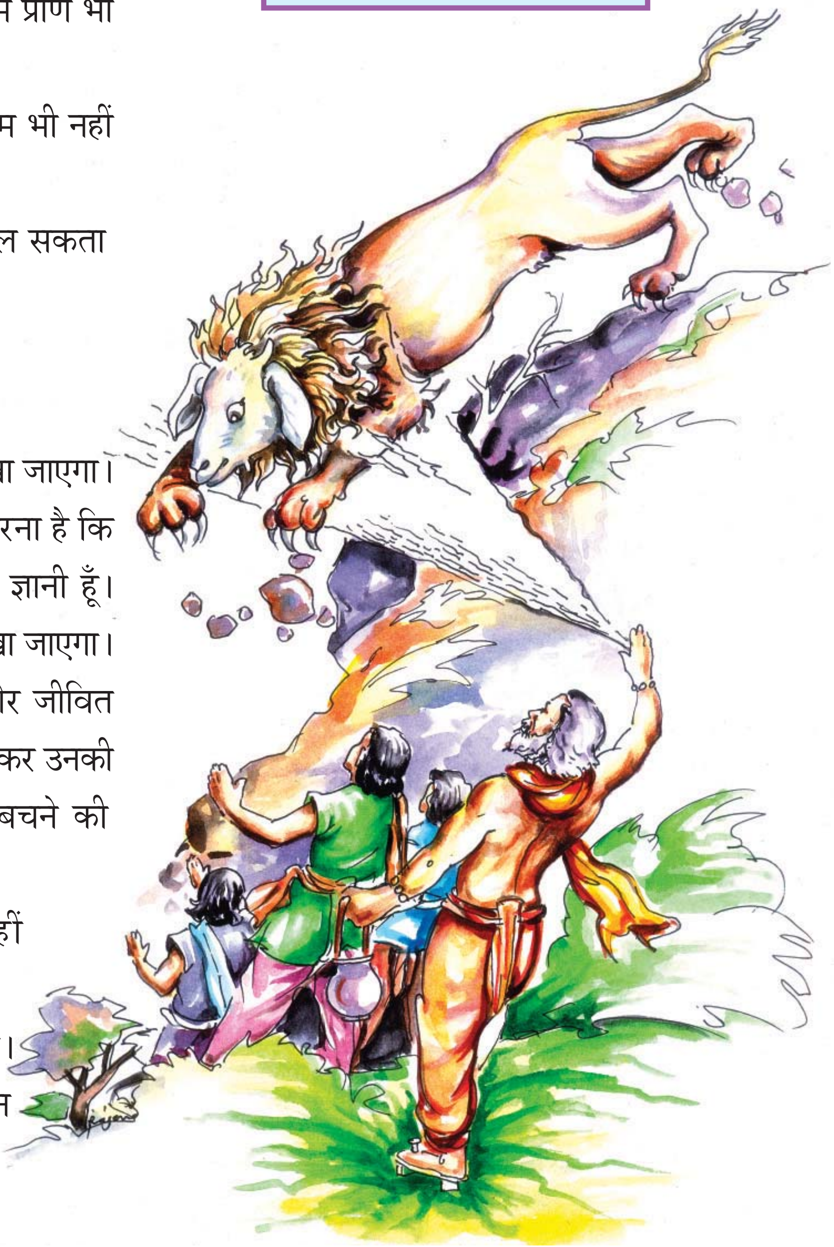

गुरु : मैं जानता हूँ।

राजकुमार 1: गुरुजी हमारी जान बचाइए।

गुरु : मुझे मालूम था कि तुम लोगों के अंदर अभी अहंकार बहुत है और तुम अपने ज्ञान का नुकसान भी कर सकते हो। इसलिए मैं तुम लोगों के पीछे-पीछे आ रहा था।

राजकुमार 1: गुरुजी मुझसे बड़ी गलती हो गई है... शेर हम सबको खा जाएगा।

गुरुजी : अब मैं अपने ज्ञान से इस शेर को बकरी बना दूँगा।

(गुरु मंत्र पढ़ता है। शेर बकरी बन जाता है और मिमियाने लगता है।)

गुरुजी : शिष्यो, ध्यान रहे। वह ज्ञान जिससे अपना या दूसरों का नुकसान हो ज्ञान नहीं बल्कि अज्ञान है। ज्ञान तो सबकी भलाई के लिए ही होता है।

सभी अभिनेता: (एकसाथ कई बार कहते हैं) ज्ञान तो सबकी भलाई के लिए ही होता है।

- **ज्ञानमार्ग एकांकी का मंचन होनेवाला है। इसके लिए एक पोस्टर तैयार करें।**
- **एकांकी का मंचन करें।**

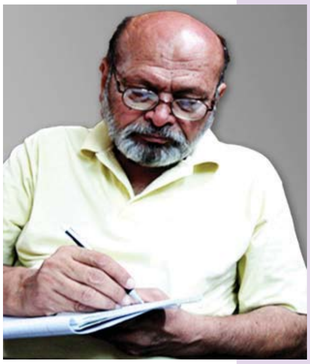

डॉ.असगर वज़ाहत *का जन्म 5 जुलाई 1946 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर में हुआ। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से पी.एच.डी तक की पढ़ाई की। उनके लेखन में तीन कहानी संग्रह, चार उपन्यास, छह नाटक और कई अन्य रचनाएँ शामिल हैं। उनके नाटकों का देश भर में मंचन हुआ है। इसके अलावा, पटकथा के क्षेत्रों में भी वे मशहूर हैं। 'आधी बानी', 'दिल्ली पहुँचना है', 'कैसी आग लगाई', 'अकी', 'सबसे सस्ता गोश्त' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। संप्रति, वे जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अध्यापक हैं।*

दोस्तों के प्रस्तुतीकरण में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

रंगमंच			
उचित रंग सज्जा है।			
सामग्रियों का उचित प्रयोग है।			
पात्र			
वेशभूषा पात्रानुकूल है।			
चाल-चलन उचित है।			
हाव-भाव स्वाभाविक है।			
अन्य पात्रों से और प्रसंग से तालमेल है।			
कथोपकथन			
संवाद स्पष्ट व श्रव्य है।			
संवाद प्रस्तुति स्वाभाविक है।			

- **वाक्य पढ़ें, रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।**

  मैं मंत्र **पढ़ता हूँ।**

  क्या, **तुम** इसमें प्राण भी **डाल सकते हो**?

- **चर्चा करें।**

  प्रत्येक वाक्य के रेखांकित शब्दों का आपसी संबंध क्या है?

  पाठ भागों से ऐसे वाक्य चुनें और लिखें।

- **ज्ञान :**

  - *हरेक में कुछ न कुछ ज्ञान है।*
  - *ज्ञान बाहरी दिखावा नहीं है।*
  - *ज्ञान सबकी भलाई के लिए है।*
  - *अहंकार से ज्ञान असफल होता है।*

> **"जिज्ञासा के बिना ज्ञान नहीं होता।"**
> **—महात्मा गाँधी**

> **"उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं जिसे आप काम में नहीं लाते।"**
> **—एंटन चेखोव**

- **ज्ञान से संबंधित उक्तियों का संकलन करें।**

यह भी पढ़ें...

कविता

मैं इधर हूँ

पी. मधुसूदनन

अनुवाद : इंदुमोहन

खुशबू से और रंगों से
एक फूल बोला– मैं इधर हूँ।
गानों से और लहरियों से
चिड़िया बोली– मैं इधर हूँ।

ओ शिशिर ! हवा को भेज दिया कर
बोला समंदर– मैं इधर हूँ।

चाँद ! तुम चाँदनी उड़ेलते रहो
जुगुनू बोले– हम भी हैं।

सागर पहाड़ नदियाँ सब कहते हैं–
हम इधर हैं।

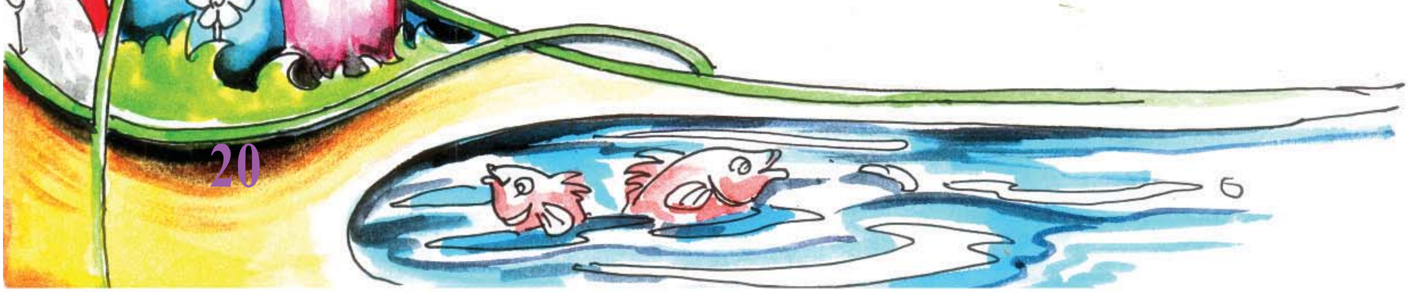

रंगों से, आवाज़ों से, लौ से
गंध, लहर सब
यही कहते हैं– मैं इधर हूँ।

मेरे प्रिय साथी
तुम भी बोलो न, ज़ोर से
मैं इधर हूँ।

- **चर्चा करें :**
  "मैं इधर हूँ" साबित करने में ज्ञान की क्या भूमिका है?
- **कविता पाठ करें।**

पी. मधुसूदनन *का जन्म एरणाकुलम के वलयनचिरङरा में हुआ। आप 'अबूदाबी शक्ति अवार्ड' और 'केरल बाल साहित्य इंस्टिट्यूट अवार्ड' से सम्मानित हैं। आप श्रीमूलनगरम अकवूर माध्यमिक स्कूल में प्रधानाध्यापक हैं।*

अधिगम उपलब्धियाँ

- कहानी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कहानी को एकांकी के रूप में बदलता है।
- कार्टून पढ़कर विचार प्रस्तुत करता है।
- पोस्टर तैयार करता है।
- एकांकी का मंचन करता है।
- कविता का आशय लिखता है।
- कविता पाठ करता है।
- कर्ता-क्रिया अन्विति का विश्लेषण करता है और प्रयोग करता है।

मदद लें...

अदब	ആദരവ് மரியாதை ಗೌರವ respect
आमदनी	വരുമാനം வருமானம் ಆದಾಯ income
इंतज़ाम	ഏർപ്പാട് முன்னேற்பாடு ವ್ಯವಸ್ಥೆ arrangement
चाँदनी उड़ेलना	നിലാവ് തൂവുക, நிலவொளி வீசுதல்□ ಬೆಳದಿಂಗಳು ಹರಡು
उलट	എതിര് எதிரான ವಿರುದ್ಧ opposite
कचरा बीननेवाला	ചപ്പ് ചവറുകൾ പെറുക്കുന്നവർ துப்புரவாளர்கள் ತರಗೆಲೆ ಹೆಕ್ಕುವವರು rag sorters
खाल	ചർമ്മം தோல் ಚರ್ಮ skin
खासियत	സവിശേഷത சிறப்பு ವಿಶೇಷತೆ speciality
गुज़रना	കടന്നു പോവുക கடந்து செல்லுதல் ದಾಟು to pass
गुस्ताखी	ധിക്കാരം கர்வம் ಧಿಕ್ಕರಿಸು impudence
गृहिणियाँ	വീട്ടമ്മമാർ குடும்பத்தலைவி ಗೃಹಿಣಿ the mistresses of house
चतुर	ബുദ്ധിമാൻ ஞானி ಬುದ್ಧಿವಂತ wise
चरागाह	മേച്ചിൽ സ്ഥലം மேய்ச்சல் நிலம் ಮೇವಿನ ಸ್ಥಳ grazing land
ज़्यादा	കൂടുതൽ *அதிகம்* ಅಧಿಕ more
दंड	ശിക്ഷ *தண்டனை* ಶಿಕ್ಷೆ punishment
दहाड़कर	ഗർജ്ജിച്ച് കൊണ്ട് *கர்ஜித்துக்கொண்டு* ಘರ್ಜಿಸಿ
दाग	കറ *கறை* ಕಲೆ stain
धोबिनें	അലക്കുകാരികൾ பெண் சலவைத்தொழிலாளிகள் ದೋಬಿ
नुकसान	നഷ്ടം *நஷ்டம்* ನಷ್ಟ loss
फ़सल	വിളവ് *அருவடை* ಕೊಯ್ಲು harvest

बुज़ुर्ग	പ്രായമുള്ളവർ வயதானவர் ವಯಸ್ಸಾದ aged
बुवाई	വിത விதை ಬಿತ್ತು sowing
बौख़ला गए	കോപാന്ധനായി கோபத்தால் பைத்தியமாகுதல் ಕೋಪಾವಿಷ್ಟನಾಗಿ to loose one's temper
मढ़ना	പൊതിയുക பொதிந்து ಹೊದೆಯು to frame
मामूली	സാധാരണമായ பொதுவான ಸಾಮಾನ್ಯ ordinary
मुकाबला करना	മത്സരിക്കുക போட்டியிடுதல் ಸ್ಪರ್ಧಿಸು to compete
मूर्ख	വിഡ്ഢി முட்டாள் ಮೂರ್ಖ fool
मौज़ूद	സന്നിഹിതരായ ஆஜரான ಇರುವ present
रेत	മണൽ மணல் ಹೊಯ್ಗೆ sand
लहरियाँ	തരംഗങ്ങൾ சிற்றலைகள் ತರಂಗ ripples
लाल पीला होकर	अत्यधिक क्रुद्ध होकर
लिपिक	ഗുമസ്തൻ குமஸ்தா ಗುಮಾಸ್ತ clerk
लौ	ज्वाला
विदुषी	विद्वान स्त्री
समझदार	വിവേകമുള്ള அறிவார்ந்த ವಿವೇಚನೆಯುಳ್ಳ wise
सादगी	सरलता
शख़्स	व्यक्ति
हुनर	क्षमता

इकाई – 2

"सपने वे सच नहीं होते
जो सोते वक्त देखे जाते हैं;
सपने वे सच होते हैं
जिनके लिए आप सोना छोड़ देते हैं।"

- दृश्य और पंक्तियाँ क्या बताते हैं?

कविता

सुख-दुख

सुमित्रानंदन पंत

मैं नहीं चाहता चिर-सुख,
मैं नहीं चाहता चिर-दुख;
सुख-दुख की खेल मिचौनी,
खोले जीवन अपना मुख!

सुख-दुख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरन;
फिर घन में ओझल हो शशि
फिर शशि से ओझल हो घन!

'सुख-दुख की खेल मिचौनी,
खोले जीवन अपना मुख।'
-इन पंक्तियों का आशय क्या है?

'फिर घन में ओझल हो शशि
फिर शशि से ओझल हो घन।' -यहाँ घन और शशि किन-किन के प्रतीक हैं?

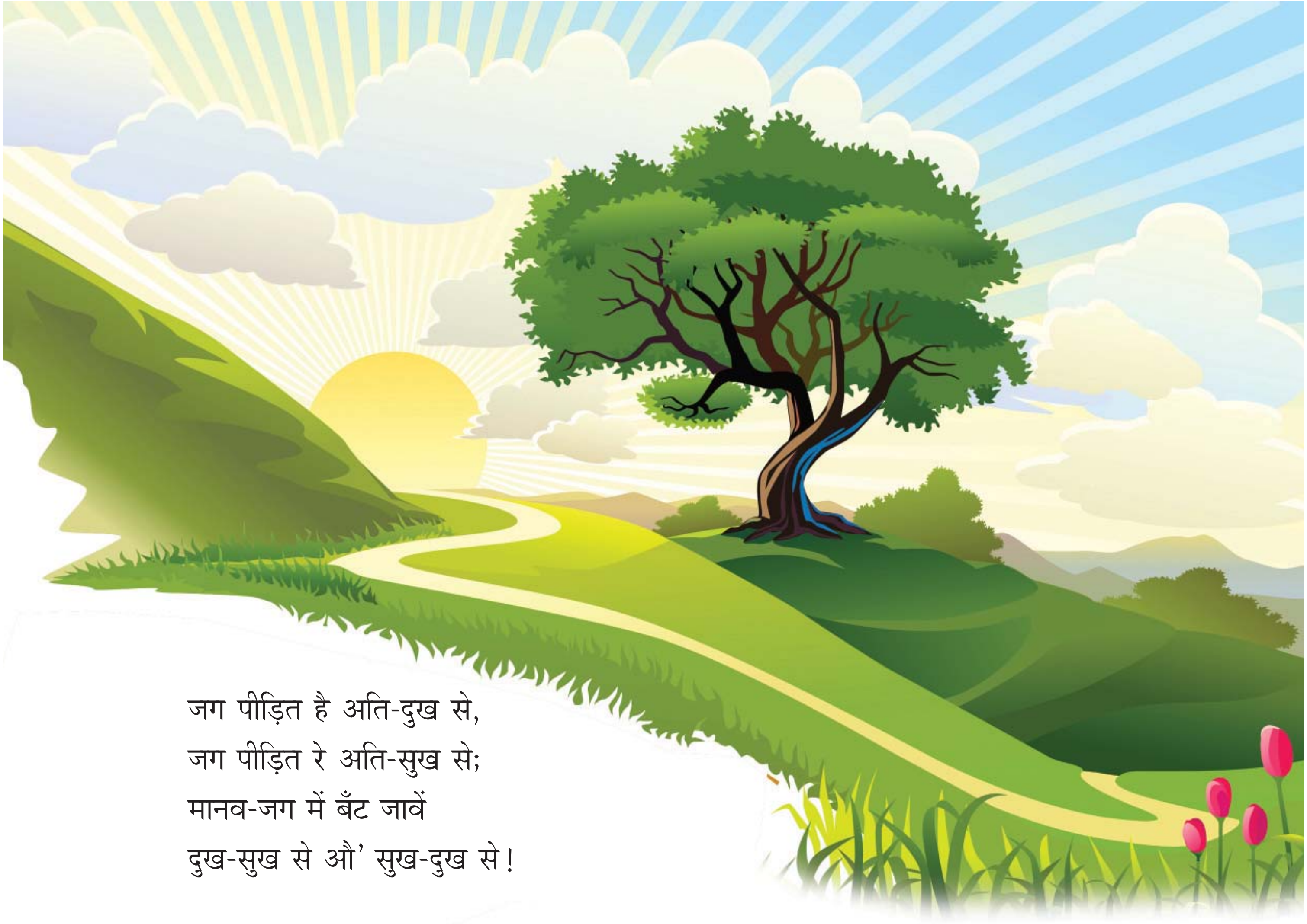

जग पीड़ित है अति-दुख से,
जग पीड़ित रे अति-सुख से;
मानव-जग में बँट जावें
दुख-सुख से औ’ सुख-दुख से!

अविरत दुख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न;
दुख-सुख की निशा-दिवा में
सोता-जागता जग-जीवन!

‘अविरत सुख भी उत्पीड़न’ -क्या आप इससे सहमत है? क्यों?

यह साँझ उषा का आँगन,
आलिंगन विरह-मिलन का;
चिर हास-अश्रुमय आनन
रे इस मानव-जीवन का!

- **कविता से शब्द-युग्मों का चयन करके लिखें।**

  सुख-दुख

  ....

  ....

  ....

  ....

- **वर्गपहेली की पूर्ति करें।**

दाईं ओर ⇨

1. ‘मुख’ का समानार्थी शब्द।
5. इसका अर्थ है– ‘आकाश’।
6. सुख-दुख के मिलन से यह परिपूर्ण हो जाता है।
9. यह ‘निरंतर’ का समानार्थी है।

नीचे की ओर ⇩

2. सफलता पाने के लिए इसकी ज़रूरत है।
3. ‘मेघ’ के लिए इस कविता में प्रयुक्त शब्द।
4. कविता में ‘संसार’ का प्रतीकात्मक शब्द।
7. ‘उषा’ का अर्थ।
8. ‘सुख-दुख’ किस विधा की रचना है?
10. यह कभी नहीं बोलना चाहिए।

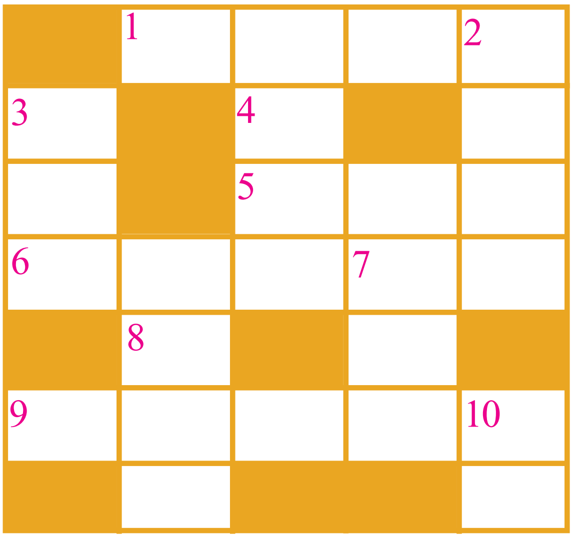

- **‘सुख-दुख’ कविता का आशय लिखें।**

मेरी रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।			
कवि-परिचय दिया है।	☐	☐	☐
विषय-वस्तु का उल्लेख है।	☐	☐	☐
अपना दृष्टिकोण लिखा है।	☐	☐	☐

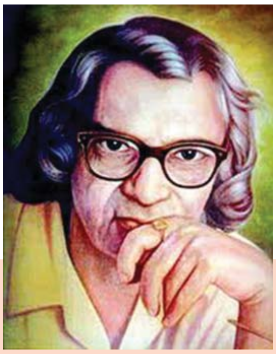

सुमित्रानंदन पंत *का जन्म कुमायूँ के कौसानी ग्राम में 20 मई 1900 को हुआ। सात वर्ष की आयु में आपने सर्वप्रथम छंद-रचना की। 1921 में महात्मा गाँधी की प्रेरणा से पढ़ाई छोड़ दी। आपने प्रगतिशील विचारों की पत्रिका ‘रूपाभ’ निकाली थी। 1942 को लोकायतन नामक सांस्कृतिक पीठ की योजना बनाई। 1950 में आकाशवाणी से संबद्ध हुए। 28 दिसंबर 1977 को आपकी मृत्यु हुई। ‘कला और बूढ़ा चाँद’ पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, ‘लोकायतन’ पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और ‘चिदंबरा’ पर ज्ञानपीठ पुरस्कार से आप सम्मानित हुए।*

संस्मरण

पिता का प्रायश्चित

अरुण गाँधी

अनुवाद : अरविंद गुप्ता

उस समय मैं सोलह बरस का था। और अपने माता-पिता के साथ दक्षिण अफ्रीका में डरबन से करीब 18 मील दूर एक आश्रम में रहता था। आश्रम को मेरे दादाजी महात्मा गाँधी ने स्थापित किया था। आश्रम दूरदराज के इलाके में था। वहाँ दूर-दूर तक, बस, गन्ने के खेत थे। शहर से बहुत दूर रहने के कारण वहाँ हमारे कोई पड़ोसी नहीं थे। इसलिए मैं और मेरी दो बहिनें हमेशा शहर जाने के इंतज़ार में रहते थे। हम शहर जाने के हर मौके की तलाश में रहते, जिससे हम अपने मित्रों से मिल सकें और साथ ही वहाँ के सिनेमाघर में फिल्में देख सकें।

एक दिन पिताजी ने मुझसे कहा कि मैं उन्हें कार से शहर ले जाऊँ। उनकी वहाँ पूरे दिन की एक मीटिंग थी। मुझे ऐसे ही मौके की तलाश थी। क्योंकि मैं शहर जा रहा था, माँ ने मुझे सामान लाने की एक लंबी लिस्ट थमा दी। शहर में मुझे पूरा दिन बिताना था। इसलिए पिताजी ने मुझसे वहाँ कई बकाया कामों को पूरा करने को कहा। इसमें कार की सर्वीसिंग भी शामिल थी।

मैंने पिताजी को मीटिंग की जगह पर छोड़ा तो उन्होंने मुझे पाँच बजे वहीं आ जाने को कहा। बताए गए कामों को फटाफट निपटाने के बाद मैं झट से सिनेमाघर में घुस गया। वहाँ जॉन बेन की एक दिलचस्प फिल्म देखते-देखते मुझे समय का बिलकुल ध्यान नहीं रहा। और जब ध्यान आया तब तक शाम के साढ़े पाँच बज चुके थे। मैं झटपट गैरेज पहुँचा। वहाँ से कार लेकर जब मैं पिताजी के पास पहुँचा तब तक शाम के छह बज चुके थे। पिताजी बेसब्री से मेरा इंतज़ार कर रहे थे।

उन्होंने उत्सुकतापूर्वक पूछा, "तुम लेट क्यों हुए?" उन्हें यह बताते हुए मुझे बहुत शर्म आई कि मैं जॉन बेन की एक पश्चिमी फिल्म देख रहा था। इसलिए मैंने कह दिया कि कार तैयार नहीं थी इसलिए मुझे वहाँ देर हो गई। मुझे इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि पिताजी पहले ही गैरेज को फोन कर चुके थे और असलियत से वाकिफ़ थे। वे मेरे झूठ को जान चुके थे पर बोले, "जिस तरह से मैंने तुम्हें बड़ा किया है उसमें मुझसे कोई भारी चूक हुई है। मैंने तुम्हें सच बोलने का आत्मविश्वास नहीं दिया है। अब मैं घर तक की अठारह मील की दूरी पैदल चलकर ही तय करूँगा।" यह कहते हुए सूट-बूट पहने पिताजी ने चलना शुरू किया। अंधेरा हो चुका था और ज़्यादातर रास्ता कच्चा था। सड़क सुनसान थी और वहाँ कोई रोशनी भी नहीं थी। मैं पिताजी को अकेला नहीं छोड़ सकता था।

वह झूठ बोला, "कार तैयार नहीं थी इसलिए देर हो गई।" –इस तरह झूठ बोलना क्या सही है? क्यों?

"घर तक की अठारह मील की दूरी पैदल चलकर ही तय करूँगा।" –मनीलाल गाँधी के इस निर्णय से आप सहमत है? क्यों?

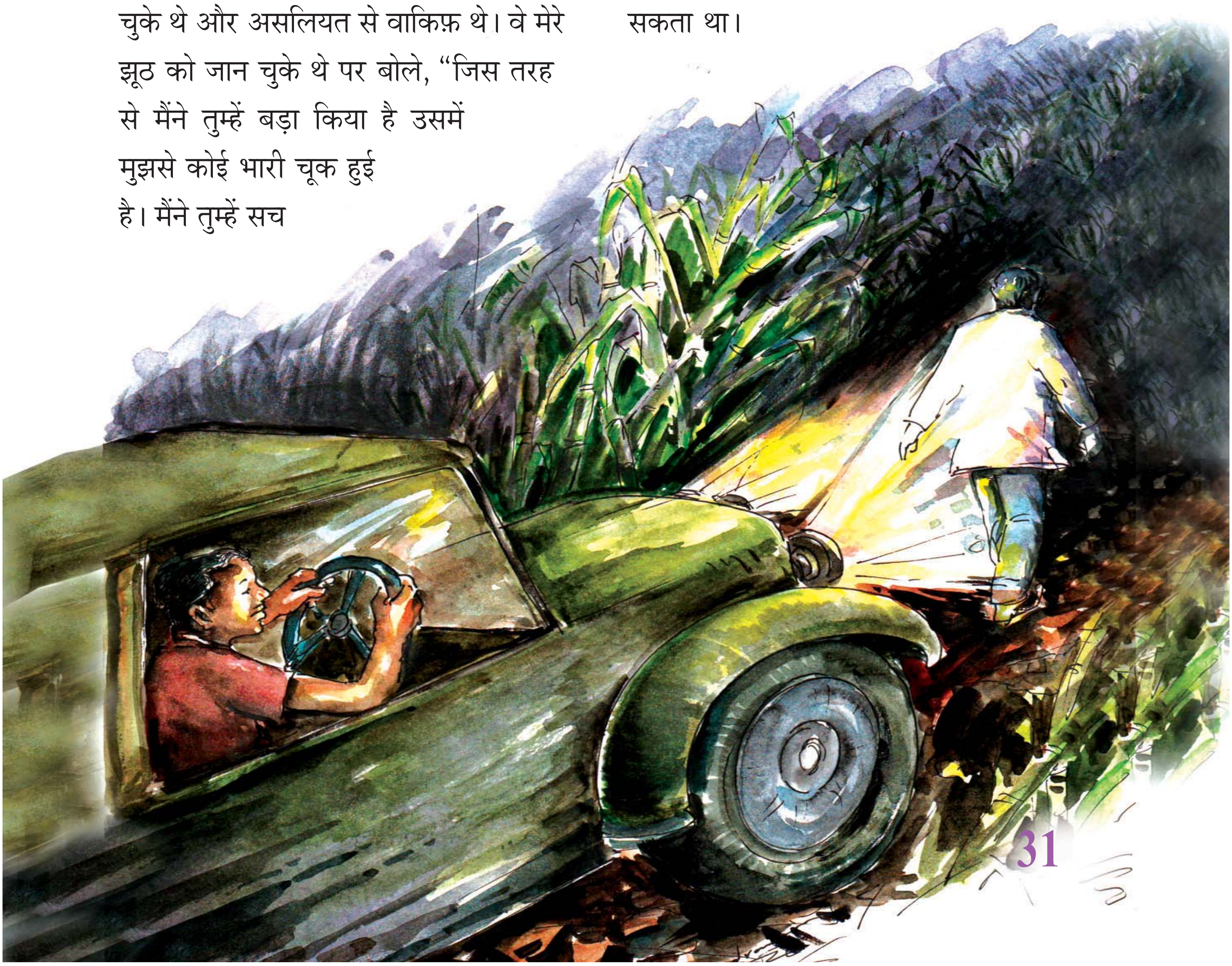

इसलिए साढ़े पाँच घंटे तक मैं उनके पीछे-पीछे धीमी गति से कार चलाता रहा। और मेरे झूठ पर पिताजी को प्रायश्चित करते हुए देखता रहा। उस दिन मैंने जीवन का एक अहम निर्णय लिया– मैं कभी भी झूठ नहीं बोलूँगा।

मैं अकसर इस घटना के बारे में सोचता हूँ। अगर पिताजी ने मुझे अन्य पालकों की तरह सज़ा दी होती तो क्या मैंने कोई सबक सीखा होता! शायद नहीं। सज़ा रहने के बाद भी मैं शायद झूठ बोलने की अपनी आदत नहीं बदलती होती। परंतु इस अहिंसक घटना का मेरे ऊपर बहुत गहरा असर हुआ। मुझे लगता है जैसे यह घटना कल ही घटी हो। अहिंसा की यही शक्ति है।

- **सही मिलान करें।**

वर्ष, सुदूर, प्रदेश, अवसर, प्रतीक्षा, ढूँढ़

इंतज़ार, बरस, तलाश, इलाका, मौका, दूरदराज

- **अर्थभेद समझें।**

डरबन से 18 मील दूर एक आश्रम में रहता है।
डरबन से 18 मील दूर एक आश्रम में रहता था।

मैं और मेरी दो बहिनें हमेशा शहर जाने के इंतज़ार में रहते हैं।
मैं और मेरी दो बहिनें हमेशा शहर जाने के इंतज़ार में रहते थे।

वहाँ दूर तक गन्ने के खेत हैं।
वहाँ दूर तक गन्ने के खेत थे।

• पत्र लिखें।

संस्मरण कैसा लगा? पुत्र की गलती पर पिता ने अपने आप को सज़ा दी। इसी दर्द के एहसास से अरुण गाँधी ने यह निर्णय लिया- मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा। अपना दर्द वह दोस्त से बाँटे बिना नहीं रह सका। उसने मित्र को पत्र लिखा। वह पत्र कल्पना करके लिखें।

मेरी रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।			
स्थान और तारीख हैं।	☐	☐	☐
उचित संबोधन है।	☐	☐	☐
विषय का सही संप्रेषण है।	☐	☐	☐
स्वनिर्देश है।	☐	☐	☐
पता है।	☐	☐	☐

डॉ. अरुण गाँधी *मनीलाल गाँधी के बेटे और महात्मा गाँधी के पोते हैं। अरुण गाँधी ने 30 साल तक टाइम्स ऑफ इंडिया में काम किया। आपकी अनेक किताबें प्रकाशित हैं। आप एम.के.गाँधी इंस्टीट्यूट के संस्थापक हैं। यह संस्था अहिंसा पर शोध करती है।*

पत्र

मेरे बच्चे को सिखाएँ...

अब्रहाम लिंकन

15 मार्च 1860

प्रिय गुरुजी,

सभी व्यक्ति न्यायप्रिय नहीं होते और न ही सब सच बोलते हैं। यह तो मेरा बच्चा कभी न कभी सीख ही लेगा। पर उसे यह अवश्य सिखाएँ कि अगर दुनिया में बदमाश लोग होते हैं तो अच्छे नेक इंसान भी होते हैं। अगर स्वार्थी राजनीतिज्ञ हैं तो जनता के हित में काम करनेवाले देशप्रेमी भी हैं। उसे यह भी सिखाएँ कि अगर दुश्मन होते हैं तो दोस्त भी होते हैं। मुझे पता है कि इसमें समय लगेगा। परंतु हो सके तो उसे यह ज़रूर सिखाएँ कि मेहनत से कमाया एक पैसा भी हराम में मिली नोटों की गड्डी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

'मेहनत से कमाया एक पैसा भी, हराम में मिली नोटों की गड्डी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।' –अपना दृष्टिकोण प्रकट करें।

उसे हारना सिखाएँ और जीत में खुश होना भी सिखाएँ। हो सके तो उसे राग-द्वेष से दूर रखें और उसे अपनी मुसीबतों को हँसकर टालना सिखाएँ। वह जल्दी ही यह सब सीखें कि बदमाशों को आसानी से काबू में किया जा सकता है।

'बदमाशों को आसानी से काबू में किया जा सकता है।' –ऐसा क्यों कहा होगा?

अगर संभव हो तो उसे किताबों की मनमोहक दुनिया में अवश्य ले जाएँ। साथ-साथ उसे प्रकृति की सुंदरता, नीले आसमान में उड़ते आज़ाद पक्षी, सुनहरी धूप में गुनगुनाती मधुमक्खियाँ और पहाड़ के ढलानों पर खिलखिलाते जंगली फूलों की हँसी को भी निहारने दें। स्कूल में उसे सिखाएँ कि नकल करके पास होने से फेल होना बेहतर है।

'नकल करके पास होने से फेल होना बेहतर है।' अब्रहाम लिंकन के इस विचार से क्या आप सहमत हैं? क्यों?

चाहे सभी लोग उसे गलत कहें, परंतु वह अपने विचारों में पक्का विश्वास रखे और उनपर अड़िग रहे। वह भले लोगों के साथ नेक व्यवहार करे और बदमाशों को करारा सबक सिखाए। जब लोग भेड़ों की तरह एक ही एक रास्ते पर चल रहे हों तो उसमें भीड़ से अलग होकर अपना रास्ता बनाने की हिम्मत हो। उसे सिखाएँ कि वह हरेक की बात को धैर्यपूर्वक सुने, फिर उसे सत्य की कसौटी पर कसे और केवल अच्छाई को ही ग्रहण करे। अगर हो सके तो उसे दुख में भी हँसने की सीख दें।

'भीड़ से अलग होकर अपना रास्ता बनाना' का मतलब क्या है?

उसे समझाएँ कि अगर रोना भी पड़े तो उसमें कोई शर्म की बात नहीं है। वह आलोचकों को नज़रअंदाज़ करें और चाटुकारों से सावधान रहे। वह अपने शरीर की ताकत के बलबूते पर भरपूर कमाई करे, परंतु अपनी आत्मा और अपने ईमान को कभी न बेचे। उसमें शक्ति हो कि चिल्लाती भीड़ के सामने भी खड़ा होकर अपने सत्य के लिए जूझता रहे। आप उसे तसल्ली से सिखाएँ, परंतु बहुत लाड़-प्यार में उसे बिगाड़ें नहीं। उसे हमेशा ऐसी सीख दें कि मानव-जाति पर उसकी असीम श्रद्धा बनी रहे।

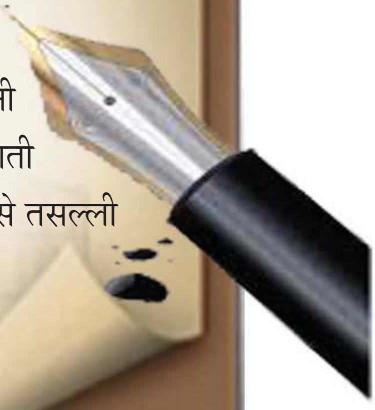

मैंने अपने पत्र में बहुत कुछ लिखा है। देखें, इसमें से क्या करना संभव है।

अब्रहाम लिंकन

- **लघु-लेख लिखें।**

'सफल जीवन' विषय पर लघु- लेख लिखें।

मेरी रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

विषय का विश्लेषण किया है।	☐	☐	☐
प्रस्तुतीकरण में क्रमबद्धता है।	☐	☐	☐
उचित भाषा का प्रयोग किया है।	☐	☐	☐
अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।	☐	☐	☐
उचित शीर्षक दिया है।	☐	☐	☐

अब्रहाम लिंकन *का जन्म 12 फरवरी 1809 को हुआ था। आपके पिता तोमस लिंकन और माता नान्सी हाङ्क्स थे। दोनों गरीब और अनपढ़ थे। स्वयं पढ़कर 1837 में अब्रहाम लिंकन वकील बने। 1860 में आप अमरीका के सोलहवीं राष्ट्रपति के रूप में चुने गए। आपने यह पत्र अपने पुत्र के शिक्षक को लिखा था, जो एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।*

यह भी पढ़ें...

कहानी

उजाला

सेवक राम यात्री

मेरी गाड़ी कई घंटे विलंब से चल रही थी। जब मैं अगले गंतव्य स्टेशन पर पहुँचा तो मैंने कई रिक्शा चालकों से जवाहर कॉलोनी चलने को कहा।

चूँकि जवाहर कॉलोनी स्टेशन से दूर पड़ती थी और रास्ता भी सुनसान था, इसलिए कोई भी रिक्शा चालक मुझे जवाहर कॉलोनी ले जाने को तैयार नहीं हुआ।

मैं प्लाटफार्म से बाहर निकलकर कोई पंद्रह मिनट तक इसी प्रतीक्षा में खड़ा रहा कि कोई रिक्शा चालक न सही, शायद ट्रेन से उतरी कोई सवारी ही उधर जानेवाले दिख जाए। रात गहराने लगी तो सुनसान रास्ते पर जाते हुए मन पक्का नहीं हो पाता, हाँ संग-साथ के लिए कोई उधर जानेवाला मिल जाय तो आदमी निड़र होकर जा सकता है।

काफी देर तक जब कोई पहचान वाला नहीं दिखा तो मैंने सोचा, अकेले जाने के बजाय स्टेशन के प्रतीक्षालय में रुककर ही कुछ घंटे बिता लिए जाए।

मगर मेरा यह सोचा हुआ भी संभव नहीं हुआ। क्योंकि प्रतीक्षालय में भीड़-भाड़ इतनी ज़्यादा थी कि मुझे वहाँ अपने लिए ठहर सकने की कोई गुंजाइश नज़र नहीं आई। इसके अलावा थोड़ी-थोड़ी सर्दी भी शुरू हो चुकी थी। जो रात के गहराते ही और भी अधिक बढ़ जाती थी। मेरे पास ओढ़ने-बिछाने को कुछ नहीं था।

अंत में यही तय किया कि साहस से काम लिया जाए और अपनी कॉलोनी की ओर प्रस्थान कर दिया जाए।

मैं मार्ग से बखूबी परिचित था। अंततः मैं मन पुखता करके चल ही पड़ा। चलते-चलते जैसे ही मैं स्टेशन की सीमा से बाहर निकला तो यह देखकर दंग रह गया कि सड़क की दोनों तरफ़ खड़े बिजली के खंभों पर एक भी बल्ब अथवा रॉड नहीं जल रही है। अंधेरी रात थी और मेरे साथ चलनेवाला कोई नहीं था। ऐसी विकट परिस्थिति में निश्चिंत होकर बढ़ते चले जाना भी सुगम नहीं था।

एक दो वाहन इधर-उधर आए, गए भी, मगर उनकी क्षीण रोशनी में रास्ता तो दूर तक नहीं देखा जा सकता था। फिर सड़क भी ठीक नहीं थी, उसमें भी जगह-जगह गड्ढे थे। खैर; किसी तरह सावधानी से धीमे-धीमे चलते हुए मैं एक मोड़ तक पहुँच ही गया।

वहाँ से मेरा रास्ता दूसरी ओर मुड़ता था। तभी मैंने देखा कि थोड़ा-सा आगे दो व्यक्ति धीमी गति से एक लालटेन हाथ में लिए आगे बढ़ रहे थे।

मुझे उस लालटेन के प्रकाश से मार्ग दिख सकने की संभावना दिखाई पड़ी। अंधेरी रात में मुझे यह प्रकाश एक ईश्वरीय विभूति जैसा जान पड़ा। मैं लपककर उन दोनों के नज़दीक पहुँच गया। उनके एकदम निकट जाकर मैंने पाया कि वे दोनों राहगीर तो निपट अंधे थे। उनके हाथ में जलती लालटेन देखकर मुझे घोर आश्चर्य हुआ। अपनी जिज्ञासा का दमन नहीं कर पाया तो मैंने पूछा, "भाई सूरदास लोगो! आप जो यह जलती लालटेन लेकर रास्ते पर चल रहे हैं, भला इससे आपको क्या लाभ मिल रहा है?"

मेरी यह सहज उत्कंठा सुनकर वे दोनों चलते-चलते रुक गए और उनमें जो उम्र में बड़ा था बोला, "बाबूजी, लालटेन हम अपने वास्ते लेकर नहीं चल रहे हैं, बल्कि आप जैसे आँखवालों के लिए लेकर चल रहे हैं।"

मैंने कहा, "मेरे लिए क्यों? मेरी आपको क्या चिंता? जिसे ज़रूरत होगी वह खुद अपनी रोशनी का प्रबंध करेगा।"

उनमें से एक बोला, "नहीं बाबूजी! यह बात नहीं है। जो रात के अंधेरे में आते-जाते हैं, उन सबके पास उजाले का इंतज़ाम नहीं होता।" फिर उसने अपनी बात बीच में रोककर पूछा, "क्या आपके पास रोशनी का प्रबंध है?"

उसका प्रश्न सुनकर मैं सकपका गया और झेंपते हुए बोला, "नहीं सूरदास। मेरे पास रोशनी की कोई व्यवस्था नहीं है। मैं तो टॉर्च लेकर भी नहीं चला।"

वह बोला, "बस तो फिर आप ही समझ लो। जब ऐसी सुनसान सड़क पर आपके पास उजाले के लिए कुछ नहीं है तो औरों के पास क्या प्रबंध होगा? इसलिए तो हम रात के समय यह जलती लालटेन लेकर चलते हैं। हम तो ठहरे निपट अंधे और हमारे लिए अंधेरे उजाले का कोई फ़र्क ही नहीं है। यह लालटेन तो उन सबके लिए हैं जो अंधेरे में चलते हुए हमारे जैसे ही अंधे हो जाते हैं और हमें टक्कर मारकर चले जाते हैं। सच्ची बात तो यह है कि उनकी टक्करों से निजात पाने के लिए ही हम रात को जलती लालटेन लेकर चलते हैं। आप जैसे किसी दयालू से ही हम यह लालटेन जलवाते भी हैं।"

मैं उस व्यक्ति की समझदारी से प्रभावित हो गया। वास्तव में उसकी बात में गहरा सच था; उस सूरदास की यह कितनी गहरी सूझ थी कि दूसरों को प्रकाश देनेवाला ही अपनी और दूसरों की राह प्रकाशित कर सकता है।

मैंने उन दोनों को गहरी कृतज्ञता अनुभव करते हुए धन्यवाद दिया और उनकी लालटेन की रोशनी में बहुत-सा बीहड़ रास्ता पार कर गया।

- **लिखें :**

  कहानी का कौन-सा प्रसंग शीर्षक को सार्थक बनाने में अधिक संगत है?

सेवक राम यात्री(से.रा.यात्री) *का जन्म 10 जुलाई 1932 को उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुआ। आपने कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, संस्मरण आदि विधाओं में लेखन कार्य किए। आप 'वर्तमान साहित्य' मासिक पत्रिका और 'विस्थापित' कथासंग्रह के संपादक रहे। आप 'साहित्य श्री', 'साहित्य भूषण' और 'महात्मा गाँधी साहित्य सम्मान' से पुरस्कृत हैं।*

अधिगम उपलब्धियाँ

- कविता पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पाठ करता है।
- कविता का भाव लिखता है।
- वर्ग-पहेली बुझाता है।
- पत्र तैयार करता है।
- लघु लेख लिखता है।
- शीर्षक और रचना का संबंध पहचानकर लिखता है।

मदद लें...

अंदाज़ा	अनुमान யூகம் ಊಹಿಸು guess
अड़िग रहना	स्थिर रहना உறுதியாக இருத்தல் ದೃಢ to be firm
अविरत	निरंतर தொடர்ச்சியாக ನಿರಂತರ continous
आँगन	മുറ്റം வாசல் ಜಗಲಿ courtyard
आनन	मुख முகம் ಮುಖ face
आलोचक	വിമർശകൻ விமர்சகன் ವಿಮರ್ಶಕ critic
इंतज़ार	प्रतीक्षा
इलाका	क्षेत्र
ईमान	സത്യസന്ധത உண்மையான ಸತ್ಯಸಂಧತೆ honesty
उत्पीड़न	വിഷമിപ്പിക്കൽ மனவேதனைஏற்படுத்தல் ನೋವುಂಟುಮಾಡು vexation
उषा	प्रभात
ओढ़ने-बिछाने	പുതയ്ക്കാനും വിരിക്കാനും மூடுவதற்கும் விரிப்பதற்கும் ಹೊದೆಯಲೂ ಹಾಸಲೂ
ओझल	अप्रत्यक्ष
कसौटी पर कसना	सच्चाई का पता लगाना
काबू में करना	वश में लाना
खेल मिचौनी	കണ്ണുപൊത്തിക്കളി கண்ணாம்பூச்சி விளையாட்டு ಕಣ್ಣುಮುಚ್ಚಾಳೆ ಆಟ
गंतव्य	പോകേണ്ട സ്ഥലം போக வேண்டிய இடம் ಗುರಿ destination
गड्डी	ढेर കൂമ്പാരം குவியல் ಕಟ್ಟು bundle

गुंजाइश	സാധ്യത சாத்தியம் ಸಾಧ್ಯತೆ scope
घन	मेघ
चाटुकार	മുഖസ്തുതിക്കാർ *முகமன் கூறுவவர்* ಹೊಗಳು ಭಟ
चूक	गलती തെറ്റ് தவறு ತಪ್ಪು mistake
झेंपना	लज्जित होना
टक्कर	ഉന്ത് தள்ளு ದೂಡು push
टालना	അവഗണിക്കുക *புறக்கணித்தல்* ಅವಗಣಿಸು to avoid
ढलान	ചരിവ് சரிந்த ಇಳಿಜಾರು slope
तलाश	खोज അന്വേഷണം *தேடுதல்* ಅನ್ವೇಷಣೆ search
थमा दी	सौंप दी ഏൽപ്പിച്ചു *ஒப்படைத்தல்* ಕೊಡು handed over
दंग रह जाना	आश्चर्य चकित रह जाना
दिलचस्प	രസകരം ஆர்வம் உண்டாகுகிற ಆಸಕ್ತಿದಾಯಕ interesting
दूर दराज	सुदूर
नकल	പകർപ്പ് பிரதி ಪ್ರತಿ copy
नज़र अंदाज़ करना	അവഗണിക്കുക புறக்கணித்தல் ಅವಗಣಿಸು to ignore
निजात पाना	बचना to escape
निपट	पूर्ण
निपटाना	ചെയ്തു തീർക്കുക செய்து முடித்தல் ಮಾಡಿಮುಗಿಸು
निहारना	देखना
नेक	अच्छा

परिपूरन	परिपूर्ण
बँट जावें	വീതിക്കപ്പെടട്ടെ பங்கு வைக்கப்பட்ட ಹಂಚಬಹುದಾದ shall be shared
बकाया	बाकी
बदमाश	ക്രൂരനായ கொடூரமான ಕ್ರೂರ wicked
बखूबी	നന്നായിട്ട് நல்லது ಉತ್ತಮ well
बीहड़	നിമ്നോന്നതമായ மேடுபள்ளமான ಸಮವಲ್ಲದ uneven
बेसब्री	അക്ഷമയോടെ அமைதியற்ற ತಾಳ್ಮೆಯಿಲ್ಲದೆ
भेड़	ചെമ്മരിയാട് செம்மறியாடு ಕುರಿಆಡು sheep
मोड़	വളവ് வளைவு ತಿರುವು a turn of the road
रॉड	tube light
राहगीर	यात्री
लपककर	വളരെ വേഗത്തിൽ மிக விரைவில் ವೇಗವಾಗಿ very fast
लालटेन	റാന്തൽ വിളക്ക് ராந்தள் விளக்கு ಲ್ಯಾಂಪ್ lantern
वाकिफ़	ज्ञाता അറിവുള്ള அறிஞன் ತಿಳಿದ conversant
शर्म	लज्जा
शशि	चाँद
सकपका जाना	लज्जित होना
सबक	सीख പാഠം *பாடம்* ನೀತಿ moral lesson
साँझ	संध्या
सावधान	ശ്രദ്ധയുള്ള *கவனமுள்ள* ಗಮನನೀಡುವ careful
हराम	निषिद्ध

इकाई – 3

- दृश्य के लिए एक शीर्षक दें।

डॉक्टर के नाम मज़दूर का पत्र

बर्तोल्ड ब्रेख्त

हमें मालूम है
अपनी बीमारी का कारण
वह एक छोटा-सा शब्द है
जिसे सब जानते हैं
पर कहता कोई नहीं

जब बीमार पड़ते हैं
तो बताया जाता है
सिर्फ तुम्हीं(डॉक्टर) हमें बचा सकते हो

जनता के पैसे से बने
बड़े-बड़े मेडिकल कॉलेजों में
खूब सारा पैसा खर्च करके
दस साल तक
डॉक्टरी की शिक्षा पाई है तुमने
तब तो तुम
हमें अवश्य अच्छा कर सकोगे
क्या सचमुच तुम हमें स्वस्थ
कर सकते हो।

'तब तो तुम
हमें अवश्य अच्छा कर
सकोगे'
-इन पंक्तियों से कवि
किसकी याद दिलाते हैं?

'एक नज़र शरीर के चिथड़ों पर डालो'- से मज़दूर क्या कहना चाहता है?

नमी और सीलन किन-किन की ओर संकेत करती हैं?

तुम्हारे पास आते हैं जब
बदन पर बचे, चिथड़े खींचकर
कान लगाकर सुनते हो तुम
हमारे नंगे जिस्मों की आवाज़
खोजते हो कारण शरीर के भीतर।
पर अगर
एक नज़र शरीर के चिथड़ों पर डालो
तो वे शायद तुम्हें ज़्यादा बता सकेंगे
क्यों घिस-पिट जाते हैं
हमारे शरीर और कपड़े

बस
एक ही कारण है दोनों का
वह एक छोटा-सा शब्द है
जिसे सब जानते हैं
पर कहता कोई नहीं।

तुम कहते हो
कंधे का दर्द टीसता है
नमी और सीलन की वजह से
डॉक्टर
तुम्हीं बताओ यह सीलन कहाँ से आई?

बहुत ज़्यादा काम
और बहुत कम भोजन ने
दुबला कर दिया है हमें
नुस्खे पर लिखते हो

"और वज़न बढ़ाओ"
यह तो वैसा ही है
दलदली घास से कहो
कि वह खुश्क रहे।

'दलदली घास का खुश्क रहना' और 'वज़न बढ़ाना' में क्या संबंध है?

डॉक्टर
तुम्हारे पास कितना वक्त है
हम जैसों के लिए?
क्या हमें मालूम नहीं
तुम्हारे घर के एक कालीन की कीमत
पाँच हज़ार मरीज़ों से मिली फीस के
बराबर है
बेशक तुम कहोगे
इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं
हमारे घर की दीवार पर
छाई सीलन भी
यही कहानी दोहराती है

हमें मालूम है

अपनी बीमारी का कारण
वह एक छोटा-सा शब्द है
जिसे सब जानते हैं
पर कहता कोई नहीं
वह है "गरीबी"।

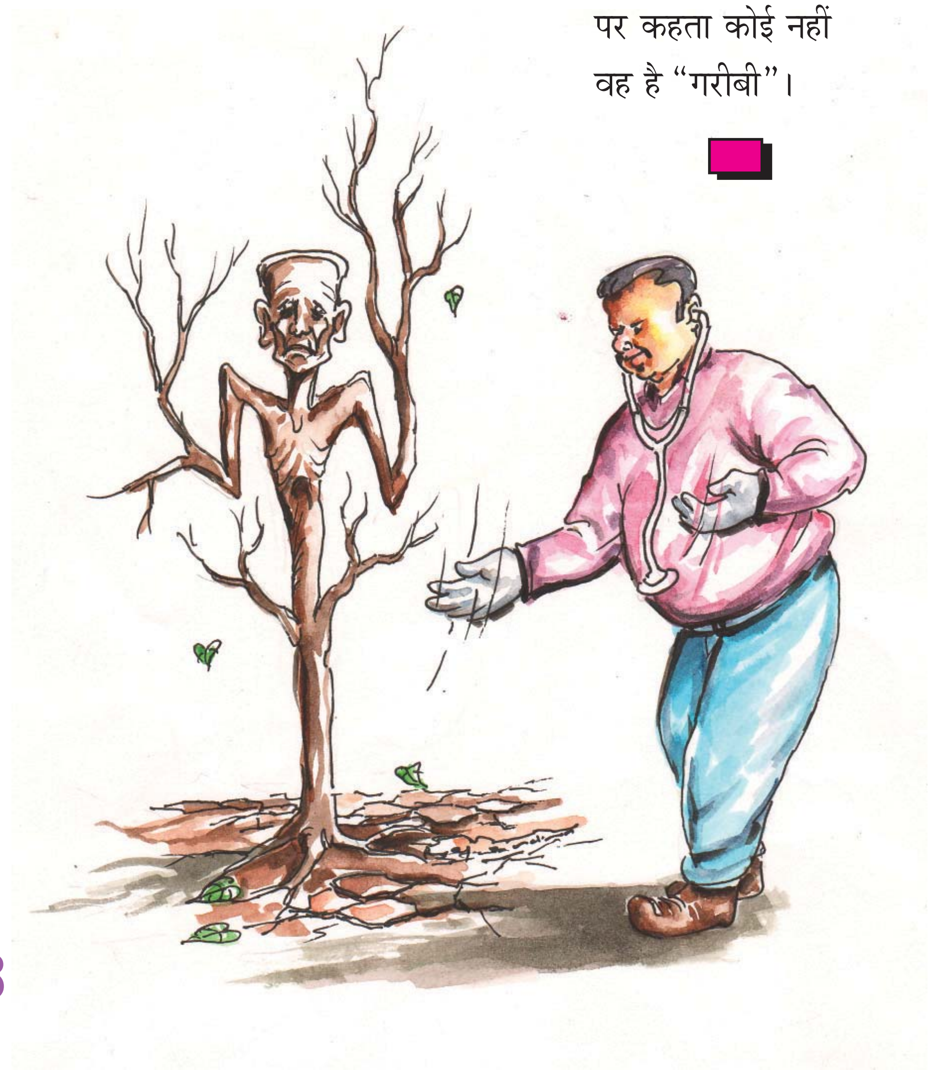

- आपकी राय में इस कविता की कौन-सी पंक्ति बहुत प्रभावशाली है?
- "तुम्हारे पास कितना वक्त है हम जैसों के लिए?" आज के समाज में इस प्रश्न की प्रासंगिकता क्या है?
- यह प्रश्न किन-किन की ओर इशारा करता है?

अपने कर्तव्य निभाने में समर्पण भावना रखनेवाले किसी व्यक्ति का अभिनंदन करते हुए उन्हें पत्र लिखें।

दोस्त की रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।			
स्थान और तारीख हैं।	☐	☐	☐
उचित संबोधन है।	☐	☐	☐
पत्र-भाषा का प्रयोग है।	☐	☐	☐
विषय का सही संप्रेषण है।	☐	☐	☐
स्वनिर्देश है।	☐	☐	☐
पता है।	☐	☐	☐

__बर्तोल्ड ब्रेख्त__ का जन्म जर्मनी के आड्सबर्ग में 1898 में हुआ था। अंग्रेज़ी और चीनी साहित्यों में आप बहुत रुचि रखते थे। आपने निबंध, नाटक, कविता आदि अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं। आप प्रमुख समाज दार्शनिक भी थे। 1956 अगस्त 14 को आपका देहांत हुआ।

- शीर्षक पढ़ें और अपने अनुभव बताएँ।

सांत्वना : छात्र व शिक्षकों की
सहकारिता की मिसाल

गरीब मरीज़ों को छात्रों की सहायता

कशमीर बाढ़ : राहतकार्य ज़ारी
पचास हज़ार इकट्ठे किए बच्चों ने

गरीबों की मदद की योजना शुरू

"समाज में कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीते हैं।"

डायरी

बात उस मंगलवार की...

डॉ. रमणी अटकुरी

आज मंगलवार है। और मैं अचानकमार अभयारण्य(छत्तीसगढ़) में बसे बाह्मनी गाँव में हूँ। अपने पाँच साथियों के साथ 65 किलोमीटर चलकर मैं यहाँ पहुँची हूँ। यहाँ हम हफ़्ते में एक दिन क्लीनिक चलाते हैं।

अचानकमार के सुंदर, घने जंगलों से गुज़रते हुए कई झरने-नाले पार करके हम यहाँ पहुँचे हैं। बरसात का मौसम, मनियारी नदी में पूरा पानी और नदी पर पुल नहीं। हमने जीप को इस पार खड़ा किया। अपने रजिस्टर, उपकरण वगैरह सर के ऊपर उठाए और नदी पार की। कमर-कमर तक पानी। बरसातों में जब नदी-नाले उफान पर होते हैं तो कई गाँव एक-दूसरे से कट जाते हैं। नदी पार करने के बाद तीन किलोमीटर और चलना पड़ा। जब तक हम क्लीनिक पहुँचे, पसीने-पसीने हो गए।

साढ़े ग्यारह बजे जब हम क्लीनिक पहुँचे तो अच्छी खासी भीड़ हमारा इंतज़ार कर रही थी। यहाँ कई गाँवों से लोग आते हैं- अभयारण्य के अंदर और बाहर दोनों जगहों से।

पाँच बजे तक तेज़ बारिश शुरू हो गई और अभी भी कुछ मरीज़ देखने बाकी हैं। आज हमने 70 मरीज़ देखे। अब तक अँधेरा बहुत गहरा गया है और बारिश भी मूसलधार है। हम अपनी जीप तक तो नहीं पहुँच पाएँगे। रात यहीं रुकना पड़ेगा। हम चूल्हे के पास बैठकर गर्म दाल-चावल और साग का भोजन करते हैं।

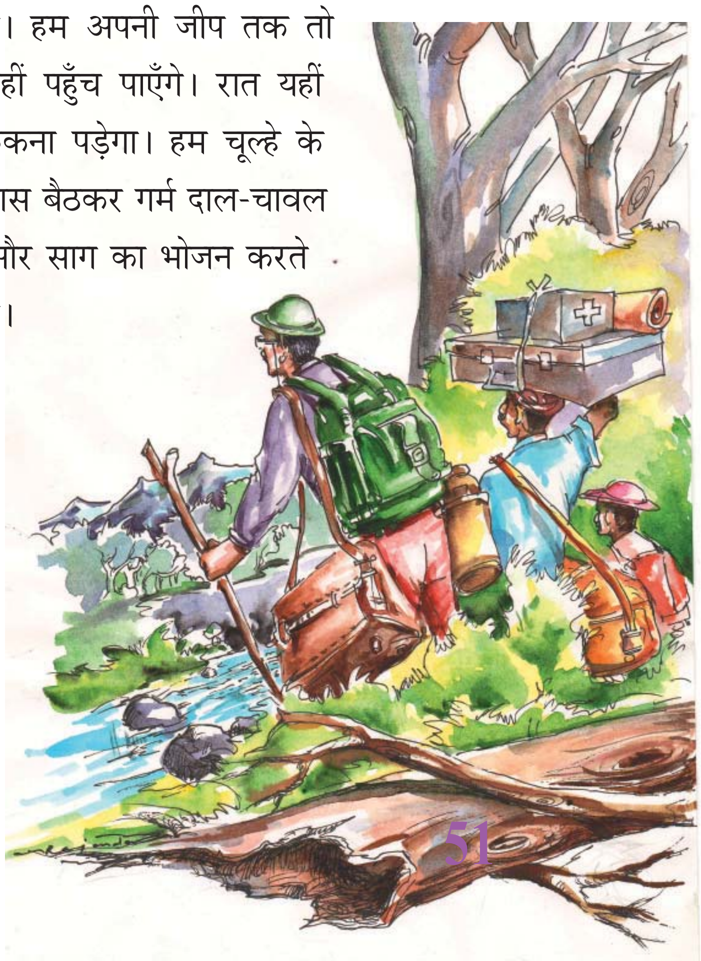

गर्म भोजन कितना स्वादिष्ट लग रहा है। दिन भर की मेहनत और बरसात की हल्की ठंडक में तो यह और भी स्वादिष्ट हो गया है।

मेहनत की कमाई का भोजन स्वादिष्ठ क्यों हो जाता है?

मेरे काम का एक बड़ा हिस्सा इन बेचारों की स्थितियों को समझना है। कई मरीज़ों को इंजेक्शन पर बड़ा विश्वास होता है। इतना कि अगर केवल गोलियाँ दी जाएँ तो उन्हें लगता ही नहीं कि उनका इलाज हो रहा है। तो उन्हें समझाना पड़ता है कि ज़्यादातर इंजेक्शन महँगे तो होते ही हैं और गैर ज़रूरी भी होते हैं।

मरीज़ गैर ज़रूरी इंजेक्शन चाहते हैं। क्यों?

आज के ज़माने में कई लोग सोचेंगे कि एक डॉक्टर का यह सब काम तो नहीं– घने जंगलों के बीच सफ़र करना, पैदल नदी पारकर गरीब लोगों का इलाज़ करना। ऐसे लोगों का जो फ़ीस भी नहीं दे सकते। बिना लाइट-पंखे के बीच जंगल में एक कच्ची झोंपड़ी में मरीज़ों को देखना, ज़मीन पर सोना। क्या यह सब एक पढ़ा-लिखा डॉक्टर करता है? मुझसे कई लोग पूछते हैं कि शहर में मेरा क्लीनिक कहाँ है? मेरा जवाब होता है कि मेरा क्लीनिक शहर में नहीं है। यहीं जंगल के बीच ये सभी मेरे क्लीनिक हैं। मुझे इसी तरह का डॉक्टर बने रहना है। यही काम मुझे अच्छा लगता है। और इसी काम का मुझे रोज़ इंतज़ार रहता है।

"यहीं जंगल के बीच ये सभी मेरे क्लीनिक हैं।" –इससे आपने क्या समझा?

- **डॉ. रमणी अटकुरी की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी लिखें।**
- **आपके दृष्टिकोण में एक डॉक्टर के गुण क्या-क्या हैं?**
  शृंखला आगे बढ़ाएँ।

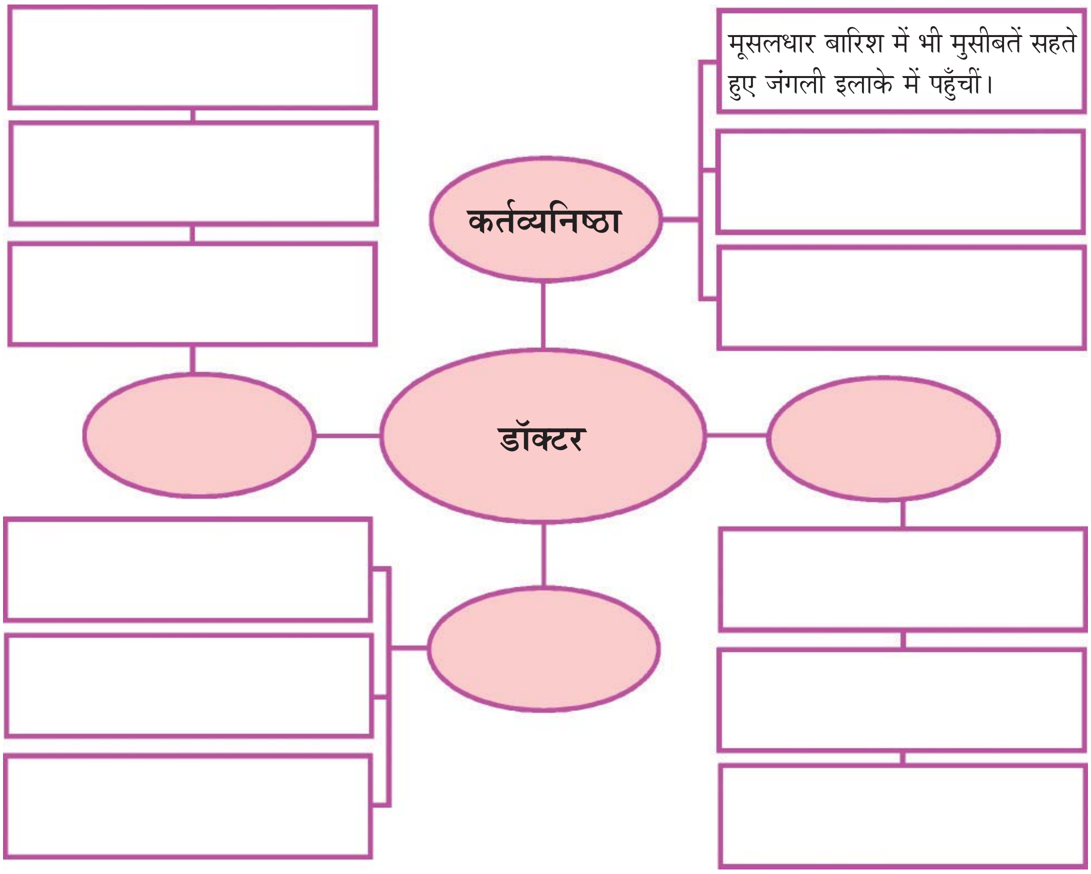

डॉ. रमणी अटकुरी *सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सक हैं। सामुदायिक चिकित्सा में स्नातकोत्तर उपाधि है। उड़ीसा, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के आदिवासी इलाकों में प्राथमिक स्वास्थ्य में पिछले 20 सालों से कार्यरत। स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, दाइयों व नर्सों को प्रशिक्षण भी देती रही हैं।*

- बातचीत लिखें।

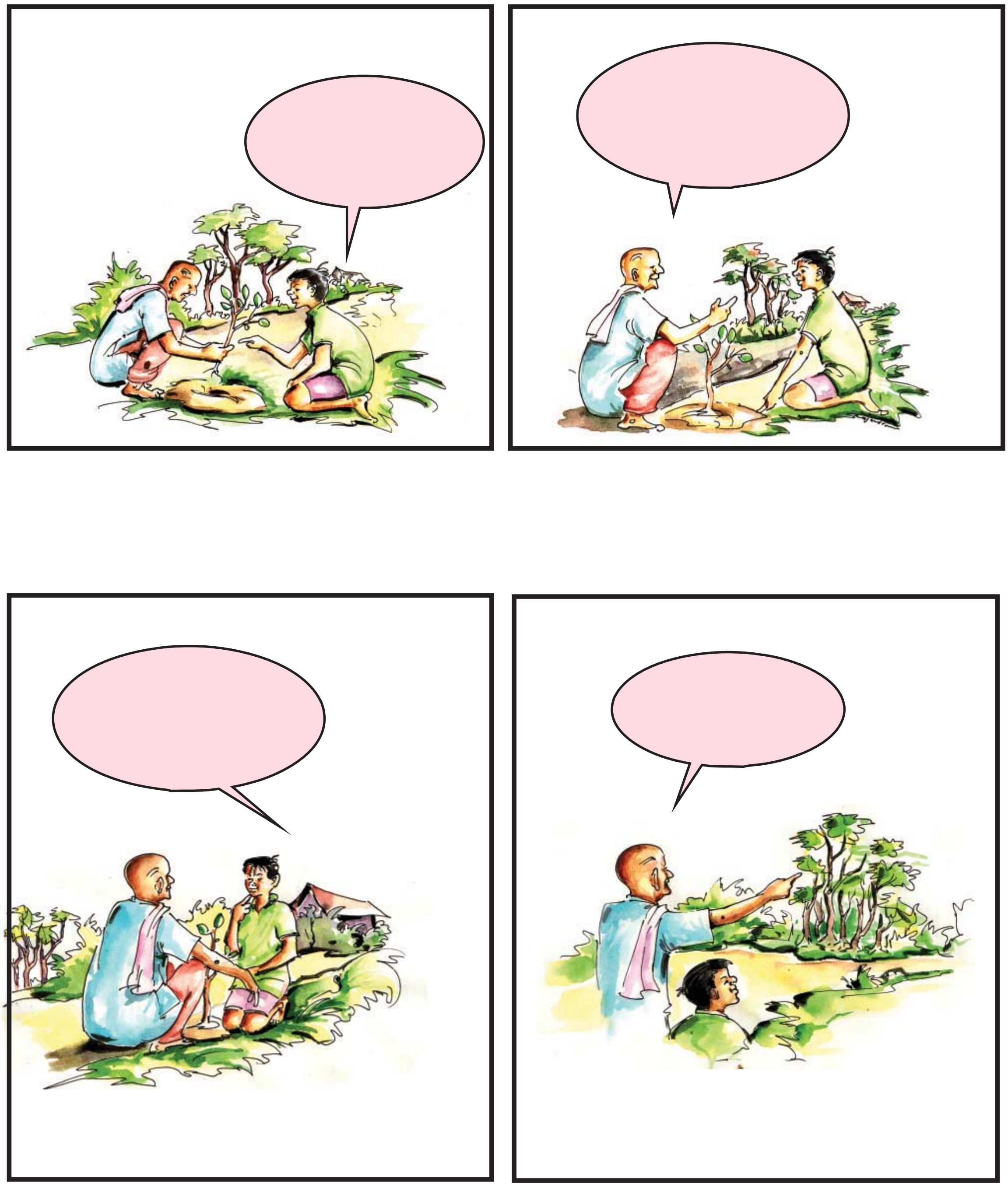

दोहे

कविता

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नाहिं, फल लागै अतिदूर।।

__कबीर__ हिंदी साहित्य के संत शिरोमणि हैं। आपका जीवन काल पंद्रहवीं सदी में था। आप कवि ही नहीं समाज सुधारक भी थे। नीरू और नीमा नामक जुलाहे दंपति ने आपका पालन-पोषण किया। आपके गुरु का नाम रामानंद है। आपकी वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसके तीन भाग हैं- साखी, सबद और रमैनी। आपको शांतिमय जीवन प्रिय था। आप अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे।

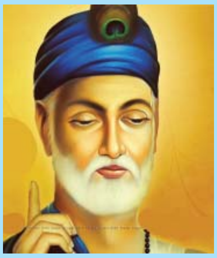

रहीम वे नर धन्य है, पर उपकारी अंग।
बाँटन पारे को लगे, ज्यों मेहंदि को रंग।।

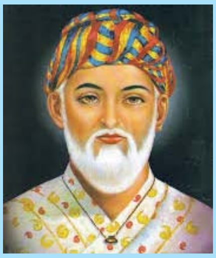

हिंदी के लोकप्रिय कवियों में __रहीम__ का नाम मुक्त कंठ से लिया जाता है। उनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म सन् 1556 ईस्वीं के लगभग लाहौर नगर(अब पाकिस्तान में) हुआ था। आप अकबर बादशाह के संरक्षक बैरम खाँ के पुत्र थे। रहीम अकबर के दरबार के नवरत्नों में से थे। अरबी, तुर्की, फारसी तथा संस्कृत के आप पंडित थे। रहीम सतसई, श्रृंगार सतसई, रासपंचाध्यायी, रहीम रत्नावली आदि इनकी रचनाएँ हैं।

दोहा

[redacted]

- चर्चा करके दोहों का आशय लिखें।

यह भी पढ़ें...

लोककथा

बटेऊ

एक था जाट और एक था उसका लड़का। घर में दो ही प्राणी थे। लड़का अभी छोटा था। लड़का बहुत चंचल था।

जाट का एक नियम था कि वह रोज़ दो अतिथियों को भोजन करवाकर ही स्वयं खाता था। अतिथियों को बुलाने के लिए वह रोज़ गाँव के चौराहे पर जाता और वहाँ से दो बटेऊ(राहगीर) बुला लाता।

उन्हें घर पर बिठाकर उसकी पूजा करता, आरती उतारता और फिर उन्हें जिमाकर आखिर में खुद अपने बेटे के साथ भोजन करता। जिस दिन जाट को राह चलते या चौराहे पर कोई बटेऊ न मिलता, उस दिन वह हलवाई की दुकान से ही दो बटेऊ(लड्डू) खरीद लाता। उन्हें ही असली बटेऊ मानकर उनकी पूजा करता, उन्हें भोज स्वीकार कराता और फिर उन्हें पूजागृह में रखकर बाद में स्वयं भोजन करता। भोजन के बाद दोनों बाप-बेटे बटेऊ खा लेते।

एक दिन जाट को कोई राहगीर न मिला तो वह हलवाई की दुकान से ही दो बटेऊ खरीद लाया और उन्हें जिमाकर घर में रख लिया। संयोग से दोनों बाप-बेटे उन्हें खा नहीं पाए। दोनों बटेऊ घर के पूजागृह में ही रखे रहे।

अगले दिन रोज़ की तरह जाट दो बटेउओं को ढूँढ़ने चल पड़ा। बहुत इंतज़ार के बाद उसे चौराहे पर दो बटेऊ मिल गए। वह उन्हें आदरपूर्वक भोजन कराने घर ले

आया। उन्हें बैठक में बिठाकर खुद रसोई में भोजन परोसने लग गया।

उधर जाट के लड़के को बहुत भूख लग रही थी। वह घर में रखे पहले दिन का बटेऊ खाना चाहता था। उसने घर के भीतर से आवाज़ दी, "पिताजी, मैं एक बटेऊ खा लूँ?"

दोनों बटेउओं ने यह सुना तो वे घबरा गए। जाट बोला, "बेटा! थोड़ा रुक जा, मैं इन्हें भोजन करा लूँ तब तू अपने हिस्से का एक बटेऊ खा लेना।" बटेउओं ने जाट का उत्तर सुना तो बेचारे और घबरा गए।

वे डर के मारे एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। भोजन परोसने में देर हुई तो लड़के ने एक बार फिर पुकारा, "पिताजी, मैं तो एक बटेऊ को खा लेता हूँ; मुझे बहुत भूख लगी है।" जाट बोला, "बेटा! थोड़ा सब्र कर, मुझे इन्हें जिमाने दे, फिर चाहे तो दोनों बटेऊ खा लेना।" अब तो दोनों बटेऊ डर से काँपने लगे। उन्होंने सोचा, लगता है हम किसी नरभक्षी आदमी की चपेट में आ गए हैं।

एक बटेऊ दूसरे से बोला, "मित्र! लगता है हम गलत फँस गए हैं। यह तो कोई नरभक्षी परिवार है। लड़का कहता है मैं एक बटेऊ खाऊँगा और बाप कहता है कि दोनों खा लेना। यह ज़रूर हमें भोजन में बेहोशी की दवा खिला देगा।"

दोनों बटेऊ उठ खड़े हुए और जाने लगे। इतने में जाट भोजन की थाली लेकर आ गया। उन्हें खड़ा देखकर वह उन्हें बिठाने लगा तो वे दोनों जाट पर बिगड़ पड़े।

जाट ने बहुत अनुनय-विनय की। लेकिन वे दोनों वहाँ से किसी प्रकार खिसकना चाहते थे। इसी रोका-थामी के शोरगुल में वहाँ काफी भीड़ इकट्ठी हो गई।

भीड़ में से किसी ने पूछा, "भई आखिर माज़रा क्या है?" एक बटेऊ बोला, "भाइयो, यह जाट हमें बहुत खुशामद करके भोजन कराने लाया था, किंतु यहाँ आकर पता लगा कि ये बाप-बेटे हम दोनों को ही खाना चाहते हैं। इसका लड़का कहता है कि मैं एक बटेऊ खाऊँगा और यह कहता है कि तू दोनों खा लेना। पहले मुझे इन्हें भोजन कराने दें।" जाट ने यह सुना तो खिलखिलाकर हँस पड़ा।

जाट को हँसते देखकर लोगों ने उसके हँसने का कारण पूछा तो उसने सबको घर में रखे दो बटेउओं का रहस्य समझा दिया जिन्हें खाने की ज़िद उसका लड़का कर रहा था।

घर में रखे दो बटेउओं का रहस्य जान सभी लोग खूब हँसने लगे। बेचारे बटेऊ तो झेंप-से रह गए। मगर अपनी झेंप छिपाकर वे भी सबकी हँसी में शामिल हो गए और फिर प्रेमपूर्वक भोजन करने बैठ गए।

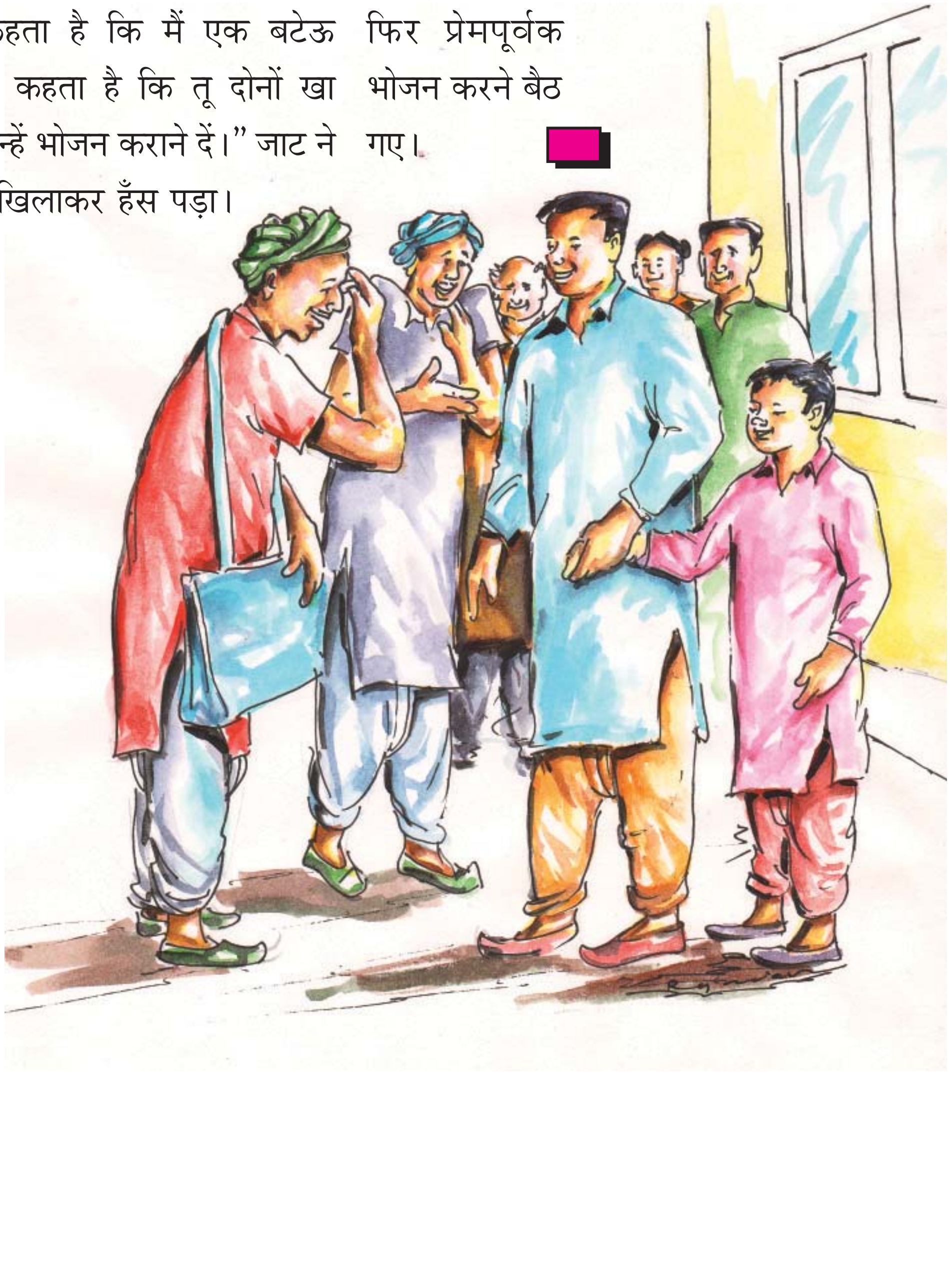

- जाट की चरित्रगत विशेषताएँ चुनकर लिखें।

लालची	मेहमानदार
परोपकारी	नरभोजी
स्वार्थी	आस्तिक

- देखें, पहचानें।

अक्तूबर २०१५ **OCTOBER 2015**

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				१	२	३
४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१

- अगले दो महीनों के कैलेंडर तैयार करें।

• साल के महीनों से परिचय पाएँ :

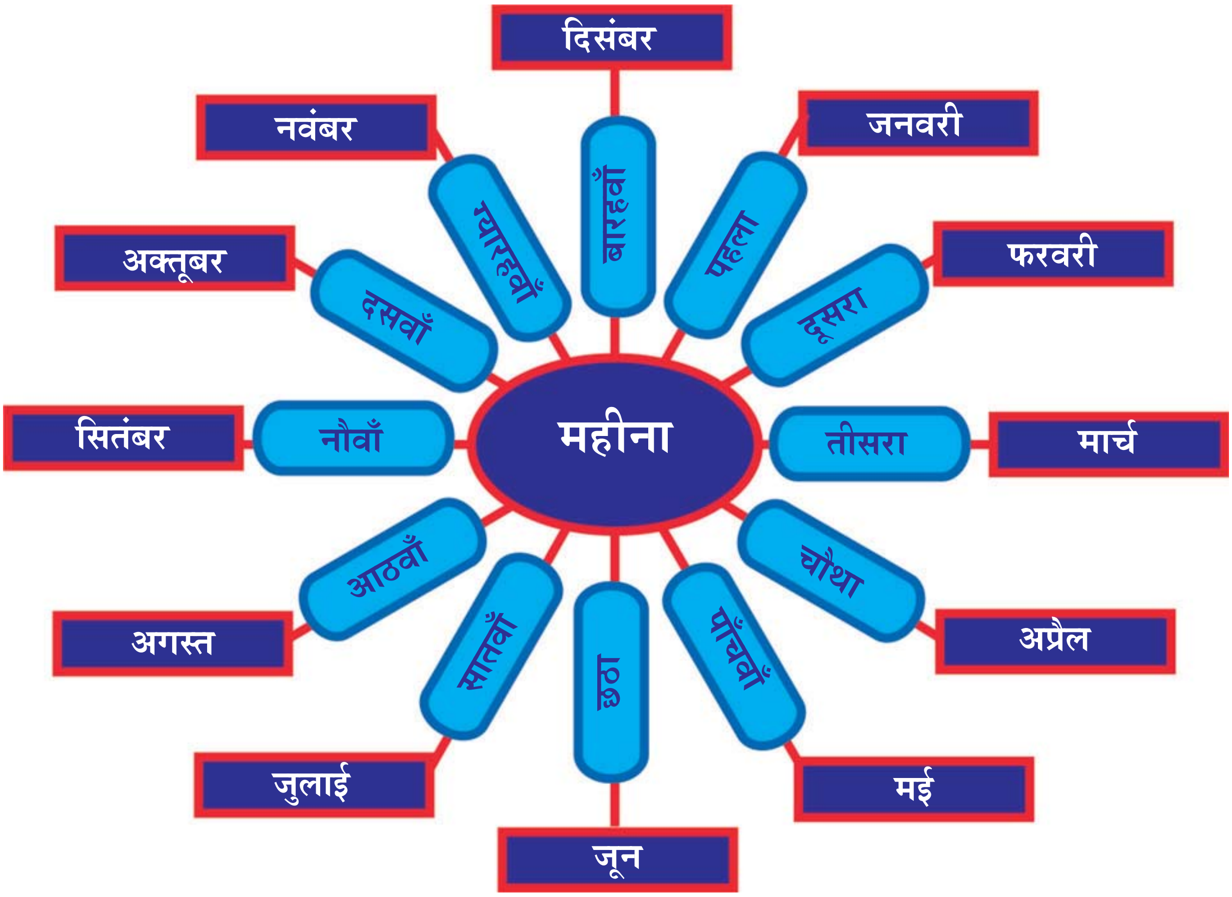

• लिखें, प्रत्येक महीने में कितने दिन हैं?

महीना	दिन
जनवरी	....
फरवरी	....
मार्च	....
अप्रैल	....
मई	....
जून	....

महीना	दिन
जुलाई	....
अगस्त	....
सितंबर	....
अक्तूबर	इकतीस
नवंबर	....
दिसंबर	....

• हिंदी के संख्यावाचक शब्द :

एक	छब्बीस	इक्यावन	छिहत्तर
दो	सत्ताईस	बावन	सतहत्तर
तीन	अट्ठाईस	तिरपन	अठहत्तर
चार	उनतीस	चौवन	उनासी
पाँच	तीस	पचपन	अस्सी
छह	इकतीस	छप्पन	इक्यासी
सात	बत्तीस	सत्तावन	बयासी
आठ	तैंतीस	अट्ठावन	तिरासी
नौ	चौंतीस	उनसठ	चौरासी
दस	पैंतीस	साठ	पचासी
ग्यारह	छत्तीस	इकसठ	छियासी
बारह	सैंतीस	बासठ	सतासी
तेरह	अड़तीस	तिरसठ	अठासी
चौदह	उनतालीस	चौंसठ	नवासी
पंद्रह	चालीस	पैंसठ	नब्बे
सोलह	इकतालीस	छियासठ	इक्यानवे
सत्रह	बयालीस	सड़सठ	बानवे
अठारह	तैंतालीस	अड़सठ	तिरानवे
उन्नीस	चवालीस	उनहत्तर	चौरानवे
बीस	पैंतालीस	सत्तर	पचानवे
इक्कीस	छियालीस	इकहत्तर	छियानवे
बाईस	सैंतालीस	बहत्तर	सतानवे
तेईस	अड़तालीस	तिहत्तर	अठानवे
चौबीस	उनचास	चौहत्तर	निन्यानवे
पच्चीस	पचास	पचहत्तर	सौ

अधिगम उपलब्धियाँ

- कविता पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पाठ करता है।
- कविता का आशय लिखता है।
- चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी लिखता है।
- प्रसंगानुकूल बातचीत लिखता है।
- दोहे पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- देवनागरी के अंकों का परिचय पाता है और लिखता है।

मदद लें...

उफान	उबालना തിളച്ചു പൊങ്ങൽ கொதித்தல் ಕುದಿಯು boiling up
कालीन	गलीचा പരവതാനി கம்பளம் ನೆಲಹಾಸು carpet
खजूर	ഈന്തപ്പന பேரீச்சம் மரம் ಖರ್ಜೂರದ ಮರ date palm
खिसकना	हट जाना തെന്നിമാറുക வழுக்கிச்செல்லுதல் ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳು to slip away
खुश्क	सूख ഉണങ്ങിയ உலர்ந்த ಒಣಗಿದ dried
खुशामद करना	प्रशंसा करना
गैर ज़रूरी	ആവശ്യമില്ലാത്ത தேவையில்லாத்தது ಅಗತ್ಯವಿಲ್ಲದ unnecessary
गोलियाँ	ഗുളികകൾ மாத்திரைகள் ಗುಳಿಗೆ tablets
घबराना	भयभीत होना
घिसपिट	തേഞ്ഞ தேய்ந்த ಸವೆಯು wornout
चपेट में आना	പിടിയിൽ പെടുക பிடியில் அகப்படுதல் ಸಿಕ್ಕಿಹಾಕು
चिथड़े	फटे पुराने कपड़े
चूल्हा	അടുപ്പ് அடுப்பு ಒಲೆ hearth
जिमाना	ഊട്ടുക ஊட்டுவது ಉಣಬಡಿಸು to feed
जिस्म	शरीर

ज़िद	हठ ശാഠ്യം பிடிவாதம் ಹಠ obstinancy
टीसना	വീണ്ടും വീണ്ടും വേദനയുണ്ടാവുക ಹೀವುಂಟುಮಾಡು to have a throbbing pain *மீண்டும் மீண்டும் வயுண்டாவது*
दलदली	ചതുപ്പ് *சதுப்பு நிலம்* ಜವುಗು swampy
नमी	നനവ് *ஈரம்* ಆರ್ದ್ರತೆ moisture
नुस्खा	മരുന്ന് കുറിപ്പ് மருந்துச்சீட்டு ಮದ್ದಿನಚೀಟಿ prescription
पंथी	यात्री
परोसना	വിളമ്പുക பரிமாறுவது ಬಡಿಸು to serve food
पुल	പാലം பாலம் ಸಂಕ bridge
बाँटन	विभाजन
बेहोशी	അബോധാവസ്ഥ உணர்வற்றநிலை ಅಬೋಧಾವಸ್ಥೆ unconciousness
मेहंदी	മൈലാഞ്ചി மருதாணி ಮದರಂಗಿ henna
रोका-थामी	തടയൽ தடுப்பு ಹಿಡಿದುನಿಲ್ಲಿಸು
वज़न	ഭാരം எடை ಭಾರ weight
शोरगुल	कोलाहल
सीलन	ഈർപ്പം ஈரப்பதமுடைய ಆರ್ದ್ರತೆ damp

इकाई – 4

ऊपर, बहुत ऊँचाई पर, नीले आकाश में एक
इंद्रधनुष रहता था। उसका नाम था सप्तम।

इंद्रधनुष धरती पर उतरा...

चित्रकथा

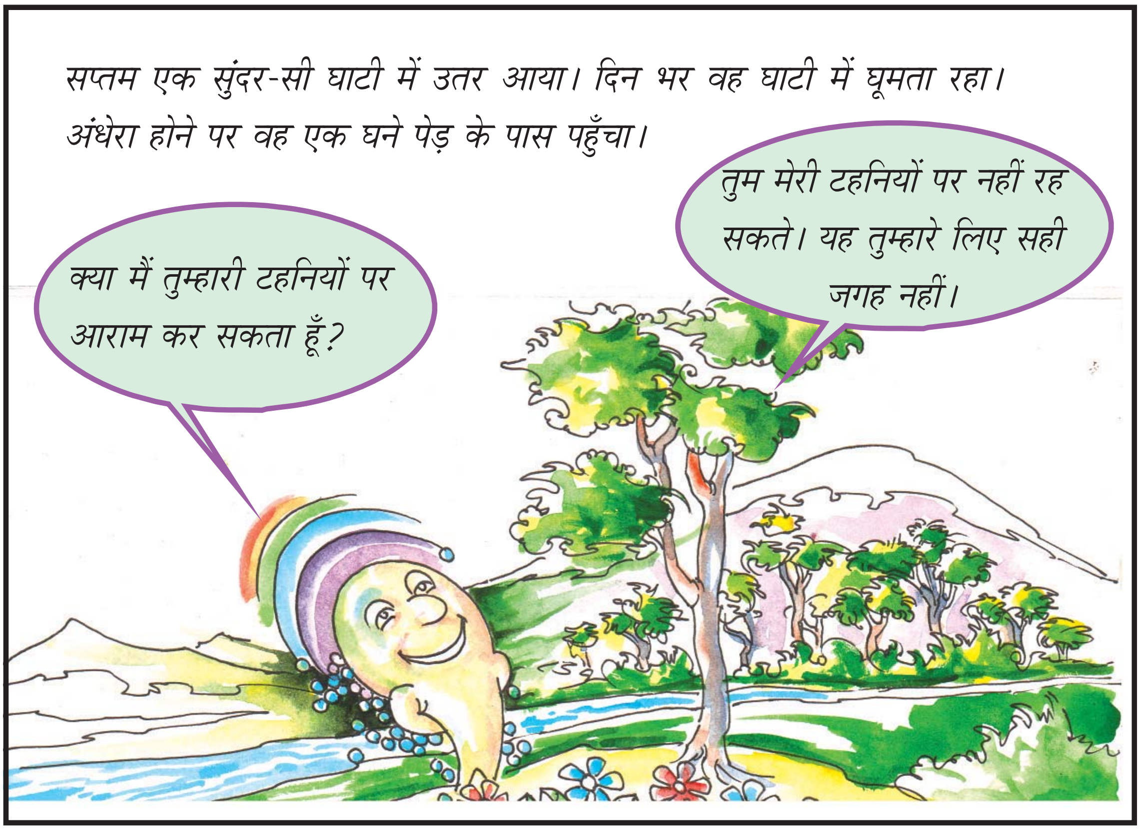

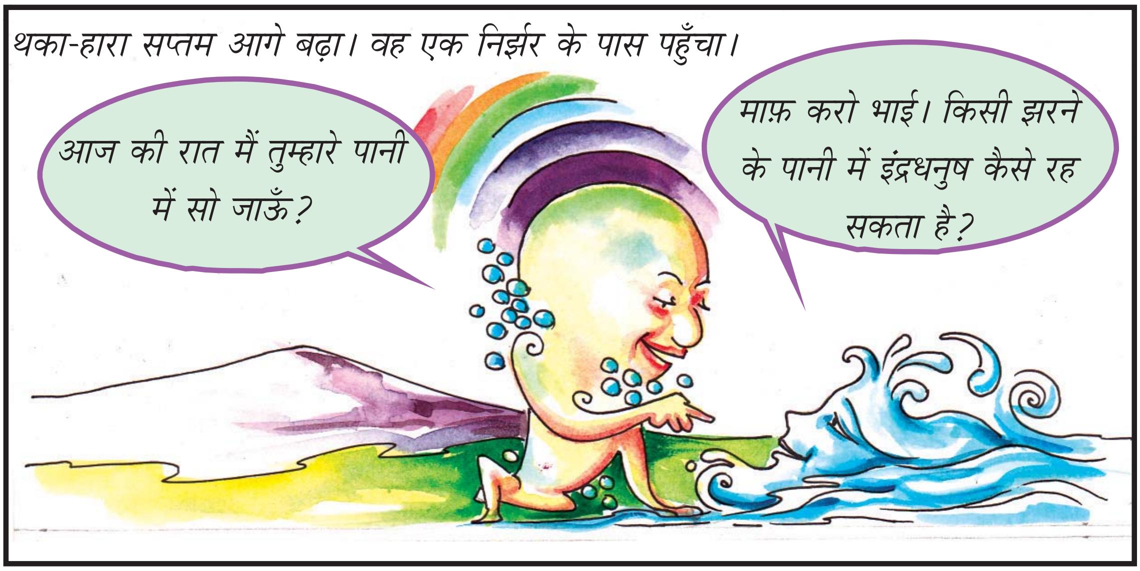
थका-हारा सप्तम आगे बढ़ा। वह एक निर्झर के पास पहुँचा।
आज की रात मैं तुम्हारे पानी में सो जाऊँ?
माफ़ करो भाई। किसी झरने के पानी में इंद्रधनुष कैसे रह सकता है?

सप्तम एक लड़के के पास गया।
क्या, मैं तुम्हारे घर में आराम कर सकता हूँ?
क्यों नहीं? तुम ज़रूर यहाँ आराम कर सकते हो। अब तो मेरा अपना इंद्रधनुष होगा।

झोंपड़ी के अंधकार में सप्तम के सुंदर रंग दिखाई नहीं दे रहे थे। वह उदास हो गया।

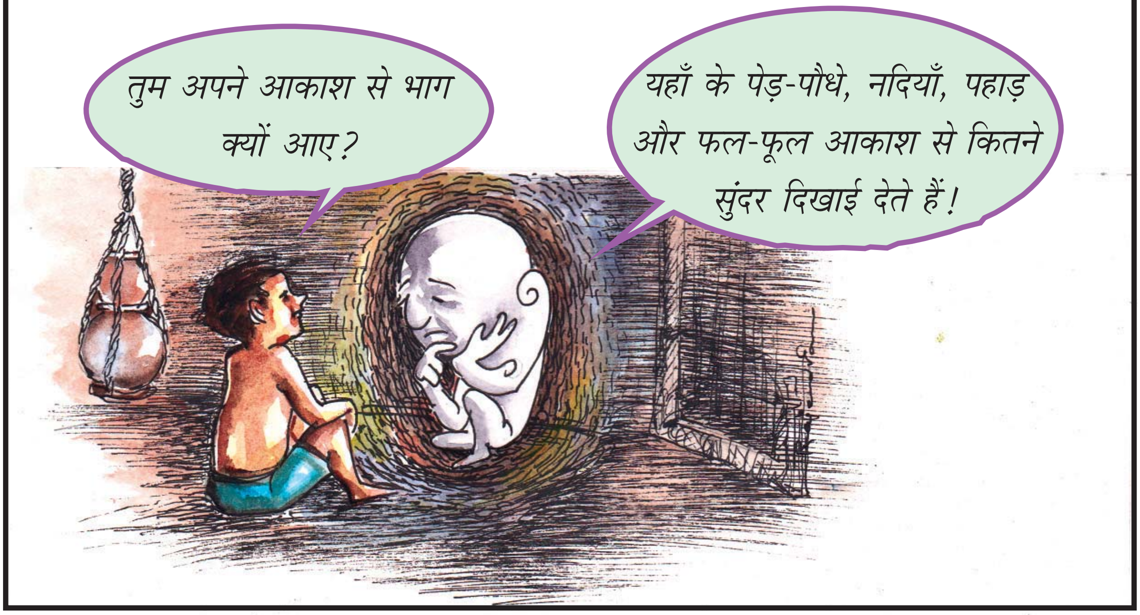

अगली सुबह...

लड़के ने उसे विदा दी। वर्षा की बूँदें बरसने लगीं। पूर्व में सूर्य की किरणें झलकने लगीं। सात रंगोंवाला इंद्रधनुष चमकने लगा। सप्तम फिर से अपना घर पहुँच गया था।

कविता

इस बारिश में

नरेश सक्सेना

जिसके पास चली गई मेरी ज़मीन
उसीके पास अब मेरी
बारिश भी चली गई

'उसी के पास अब मेरी/ बारिश भी चली गई' -से आपने क्या समझा?

अब जो घिरती हैं काली घटाएँ
उसीके लिए घिरती हैं
कूकती हैं कोयलें उसी के लिए
उसीके लिए उठती है
धरती के सीने से सौंधी सुगंध

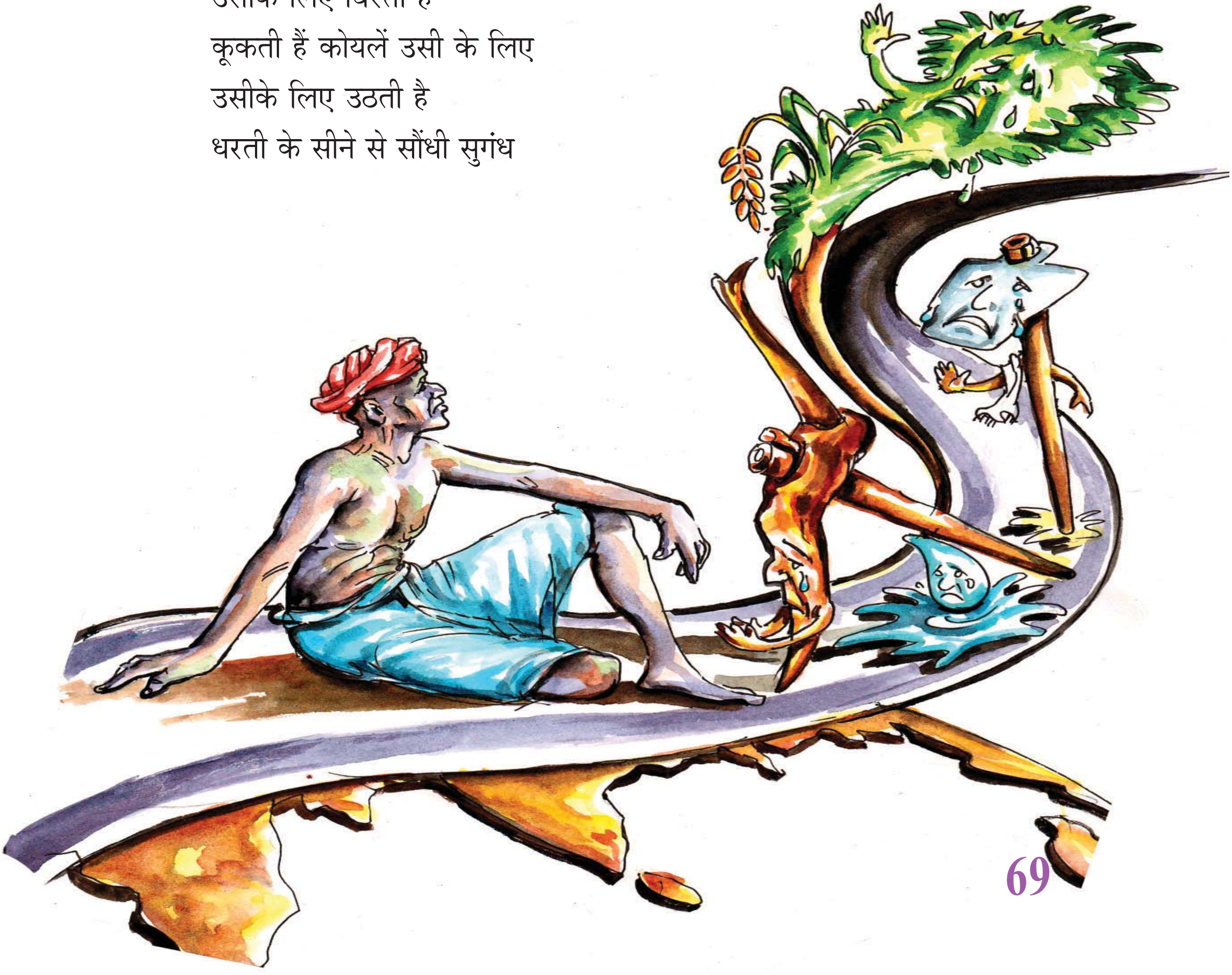

अब नहीं मेरे लिए
हल नहीं बैल नहीं
खेतों की गैल नहीं
एक हरी बूँद नहीं
तोते नहीं, ताल नहीं, नदी नहीं, आर्द्र नक्षत्र नहीं
कजरी मल्लार नहीं मेरे लिए

जिसकी नहीं कोई ज़मीन
उसका नहीं कोई आसमान।

अगली फसल होते ही सब चुकता कर दूँगा
अब तो मेरी झूठी
ये गुज़ारिश भी चली गई
उसीके पास अब मेरी बारिश भी चली गई।

'जिसकी नहीं कोई ज़मीन/ उसका नहीं कोई आसमान' -इन पंक्तियों का क्या तात्पर्य है?

- **लिखें।**

→ कविता में 'उसीके लिए' दोहराया गया है। यह प्रयोग किन-किन की ओर संकेत करता है?
→ हल नहीं/ बैल नहीं –इसमें हल और बैल किन-किन के प्रतीक हैं?
→ निम्नलिखित आशयवाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें।
फसल होने पर कर्ज चुकाने की किसान की झूठी प्रतीक्षा भी नहीं रह गई।

- **आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।**

अपनी रचना में...

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

कवि और कविता का परिचय है।			
कविता का विश्लेषण किया है।			
अपना दृष्टिकोण प्रकट किया है।			

- ## कविता पाठ करें।

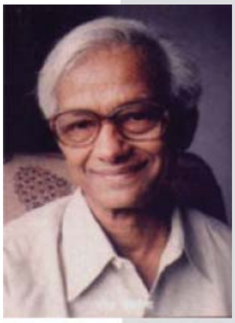

*मध्यप्रदेश के ग्वालियर में जन्मे **नरेश सक्सेना** हिंदी कविता के उन चुनिंदे खामोश लेकिन समर्पित कार्यकर्ताओं की अग्रिम पंक्ति में हैं, जिनके बिना समकालीन हिंदी कविता का वृत्त पूरा नहीं होता। उनका जन्म 16 जनवरी 1939 को मध्यप्रदेश के ग्वालियर में हुआ। वे पेशे से इंजीनियर रहे और विज्ञान तथा तकनीक की ये पढ़ाई उनकी कविता में भी समाई दिखती है। आप ने कविताओं के अतिरिक्त नाटक, फिल्मों और संपादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। समुद्र पर हो रही है बारिश(कविता संग्रह), आदमी का आदेश(नाटक) आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। साहित्य के लिए उन्हें 2000 का 'पहल' सम्मान मिला तथा निर्देशन के लिए 1992 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार।*

कवि का बयान

कोई दृश्य या चीज़ अपने आप में अकेली नहीं होती। उसके पीछे उससे जुड़ी चीज़ों का एक लंबा सिलसिला होता है। हम बिजली का बटन दबाते हैं और बल्ब जल जाता है। लेकिन इस बटन के पीछे तार हैं, खंभे हैं, ट्रान्सफॉर्मर हैं, बिजलीघर में पानी की धार से घूमती टरबाइन हैं, या भाप के बॉयलर हैं, कोयले की भट्टियाँ हैं और बहुत दूर कोयला खदानों में मज़दूर हैं। मज़दूर जो अकसर फेफड़ों में कोयला भर जाने से या सुरंगों के धसक जाने से ज़िंदा दफन हो जाते हैं। इस कविता में किसान की ज़मीन छिन जाने की कथा है। किसान की ज़मीन छिन जाने के पीछे की कड़ियाँ क्या होंगी? इस कविता में उन कड़ियों के बारे में साफ-साफ कुछ नहीं कहा गया है। पर यह कविता एक किसान की ज़मीन छिन जाने तक की कड़ियाँ और ज़मीन छिन जाने के बाद की कड़ियों में ही कहीं स्थित है। यह एक किसान का बारिश के मौसम का शोकगीत है। मोटे तौर पर इसका पाठ दादरा ताल में मैं करता हूँ। जो एक-दो-तीन, एक-दो-तीन जैसी ताल के अंतर्गत संभव है।

व्यंग्य लेख

जल बैंक

अशोक गुजराती

बाल्टी-बाल्टी पानी लाते हुए मैंने जागी आँखों सपना देखा कि चप्पे-चप्पे पर जल बैंक खुल गए हैं। आपको मोहल्लेवालों से कुछ ज़्यादा पानी हासिल हो गया है, चिंता की कोई बात नहीं। जाइए और जल बैंक में जमा कर दीजिए। मान लें कि आपको दस बाल्टी अधिक मिल गया है, तो शुद्धता के परीक्षणों के उपरांत बैंक के लॉकर में रखकर एक माह बाद नौ बाल्टी हुआ बैंक का। बैंक की इमारत के ऊपर बड़ी-बड़ी टंकियाँ हैं। वे सूद भी देते हैं। सावधि जमा योजना में साल भर बाद दस बाल्टियों के बदले ग्यारह। सौदा महँगा नहीं है। वैसे भी आजकल जिनके पास पानी है, वे पानीदार हो रहे हैं। यह तो आम जनता है, जो पानी-पानी हो रही है, बिना पानी के।

> *'चप्पे-चप्पे पर जल बैंक खुल गए हैं।' –लेखक की इस कल्पना के पीछे भविष्य का कौन-सा संकेत है?*

> *'पानी-पानी होना', 'पानीदार होना'- इन प्रयोगों का मतलब क्या है?*

एक झूठ इस मौसम में बहुत चलने लगा है। घर में पानी पर्याप्त है। केवल वाशिंग मशीन में कपड़े धोने मुश्किल हो रहे हैं। वैसे

में लोगों को अवसर मिल जाता है झूठ बोलने की अपनी आदत को भुनाने का। वे हर पड़ोसी से कहते-फिरते हैं– नहा-धोकर, कपड़े-बर्तन निपटाने के पश्चात– कि घर में पीने के वास्ते भी एक बूँद नहीं है। इस स्थिति में जल बैंक आपकी सहायता को तत्पर रहेगा। यदि सच में पानी की ज़रूरत है, तो लोन ले लें। बस आपका मकान रेहन रहेगा। तुरंत पचास हज़ार लीटर का आपका ऋण मंजूर। आपको हर महीने पाँच हज़ार मूल और एक हज़ार सूद भरना है। मूल-सूद नियमित दें, तो दस माह में सिर्फ साठ हज़ार बैंक को देंगे। हाँ, प्रति मास सूद न दें तो आपके खाते में जोड़कर चक्रवृद्धि ब्याज शुरू।

'घर में पीने के वास्ते भी एक बूँद नहीं है।' –लोग ऐसा झूठ क्यों कहते हैं?

आपकी बेटी-दामाद पानी के लिए जूझ रहे हैं, कहीं कोई सौ कि.मी. दूर। टेंशन न लें। आप बैंक के मार्फत उन्हें अपना अतिरिक्त जल भेज दें। ड्राफ्ट बनवाएँगे तो कुरियर से या एम.टी अथवा टी.टी भेज दें। पाँच हज़ार लीटर भेजने का खर्च महज तीन बाल्टी। एक आसान रास्ता और है। बैंक ने कई ए.टी.एम सेंटर खोल रखे हैं। ए.टी.एम कार्ड आप दामाद को दे दें। अपनी ब्रांच में पानी जमा करें, वो वहाँ निकाल लेगा। कैसे? सरल है। बटन दबाते ही ए.टी.एम के नल से आदेशानुसार पानी निकलना चालू हो जाएगा। बशर्ते कि आपके खाते में जमा हो। क्या कहा? एकाउंट खोलना है? जल्दी चलिए। सादा खाता दो बाल्टी, चेक बुक खाता चार। नल कनेक्शन का प्रमाण, नल का फोटो और लहरों-से लहराते आपके हस्ताक्षर... खाता खुला नहीं कि आपकी चारों उँगलियाँ पानी में।

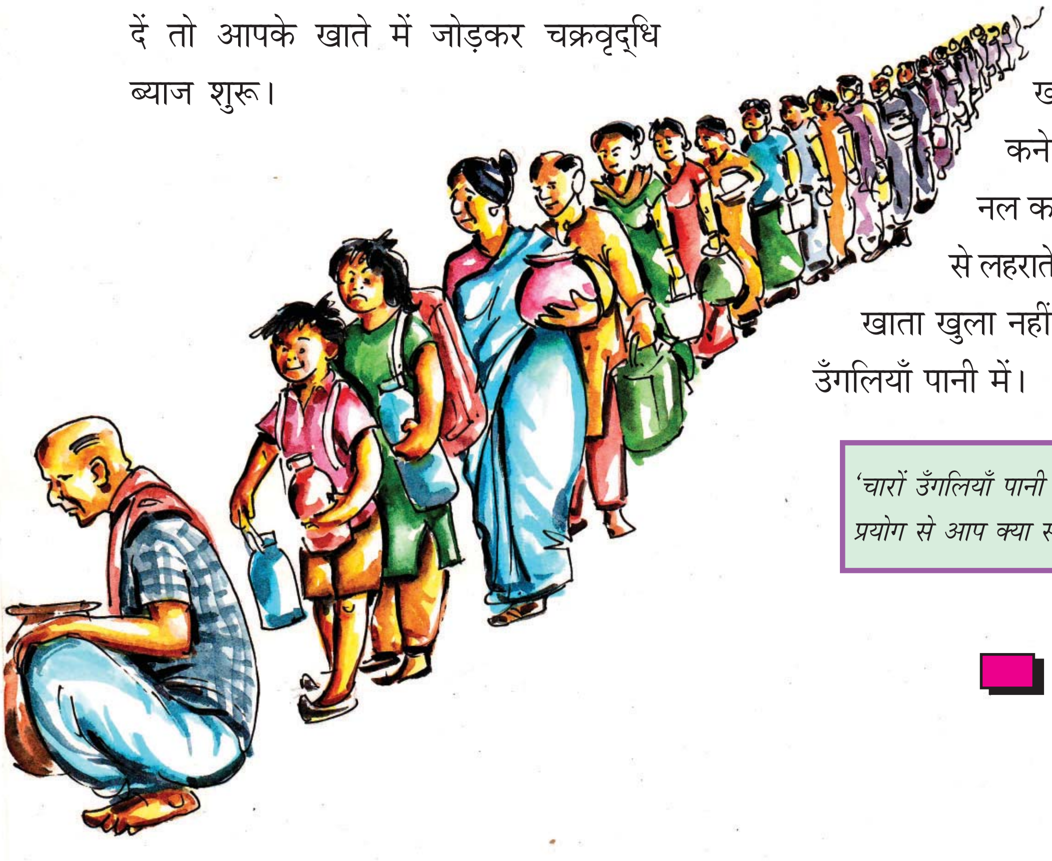

'चारों उँगलियाँ पानी में।' –इस प्रयोग से आप क्या समझते हैं?

- **चर्चा करें।**

  जल बैंक की संकल्पना कैसी लगी?

  वर्तमान समाज में इसकी प्रासंगिकता क्या है?

- **जल-संरक्षण की आवश्यकता पर नारे बनाएँ।**

जल है तो कल है।	

- **उपर्युक्त नारों की मदद से पोस्टर तैयार करें।**

दोस्त की रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

विषय का सही संप्रेषण है।			
संक्षिप्तता है।			
रूप-संविधान आकर्षक है।			

यह भी पढ़ें...

कविता

मरना

उदय प्रकाश

आदमी
मरने के बाद
कुछ नहीं सोचता।

आदमी
मरने के बाद
कुछ नहीं बोलता।

कुछ नहीं सोचने
और कुछ नहीं बोलने पर
आदमी
मर जाता है।

उदय प्रकाश का जन्म 1 जनवरी 1952 को मध्यप्रदेश के सीतापुर गाँव में हुआ। दिल्ली के जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। मध्यप्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग में अधिकारी रहे। नौ वर्षों तक टाइम्स ऑफ़ इंडिया के समाचार पाक्षिक 'दिनमान' के संपादकीय विभाग में नौकरी की। इसके अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और टेलिविज़न क्षेत्र से जुड़े रहे। सुनो कारीगर, अबूतर कबूतर, रात में हारमोनियम(कविता संग्रह), दरियाई घोड़ा, तिरिछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरी वाली लड़की, मोहनदास(कहानी संग्रह) आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। मोहनदास के लिए वर्ष 2010 में केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

- **कविता पाठ करें।**
- **'आदमी' कब 'आदमी' बन जाता है?**

इस इकाई के दौरान चित्रकथा, कविताएँ और व्यंग्य-लेख से हम गुज़रे। मानव-अस्तित्व के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखना ज़रूरी है। लिखें इस पर एक लेख।

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्रकथा पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता का आस्वादन टिप्पणी तैयार करता है।
- मुहावरा पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- नारा बनाता है।
- पोस्टर तैयार करता है।
- विचार लिखता है।

मदद लें...

आदत	ശീലം பழக்கம் ಹವ್ಯಾಸ habit
ऊब	മടുപ്പ് சலிப்பு ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲದ boredom
ऋण	कर्ज കടം கடன் ಸಾಲ debt
कजरी मल्हार	ശാസ്ത്രീയ സംഗീതത്തിലെ ഒരു രാഗം ஹிந்துஸ்தானி இசையில் ஒரு ராகம் ಶಾಸ್ತ್ರೀಯಸಂಗೀತದ ರಾಗ a *raga* in classical music
खदान	ഖനി சுறங்கம் ಗಣಿ mine
खर्च	ചെലവ് செலவு ಖರ್ಚು expense
खाता	account
गुज़ारिश	विनती അപേക്ഷ விண்ணப்பம் ವಿನಂತಿ request
गैल	വരമ്പ് வரம்பு ಲಿಹುಣಿ hedge raised to seperate fields
घाटी	താഴ്‌വാരം பள்ளத்தாக்கு ಕಣಿವೆ a valley
घिरती हैं	വലയം ചെയ്യപ്പെടുന്നു திரண்ட ಆವರಿಸಲ್ಪಡು surrounds
चप्पा-चप्पा	മുക്കിലും മൂലയിലും முக்கிலும் மூலையிலும் ಎಲ್ಲಾಕಡೆ in every nook and corner
चक्रवृद्धि ब्याज	കൂട്ടുപലിശ கூட்டுவட்டி ಚಕ್ರಬಡ್ಡಿ compound interest

जमा करना	നിക്ഷേപിക്കുക சேமித்து வைத்தல் ನಿಕ್ಷೇಪಿಸು to deposit
जूझना	മല്ലിടുക சண்டை போடுவது ಹೋರಾಟ to fight
टहनी	ചില്ല கிளை ರೆಂಬೆ twig
दामाद	മരുമകൻ மருமகன் ಅಳಿಯ son-in-law
धसक जाना	ഇടിഞ്ഞ് പോവുക இடிந்து போவது ಜರಿದುಬೀಳು
नल	pipe
पानीदार	അഭിമാനമുള്ള மதிப்புக்குரிய ಗೌರವಾನ್ವಿತ respectable
पानी पानी होना	लज्जित होना
फ़ेफ़ड़ा	ശ്വാസകോശം நுரையீரல் ಶ್ವಾಸಕೋಶ lung
बाल्टी	ബക്കറ്റ് வாளி ಬಾಲ್ದಿ bucket
महज	केवल
मार्फत	മുഖേന இடையே ಮೂಲಕ through
रेहन	പണയം பணயம் (அடகு வைதல்) ಸ್ಥಿರಆಸ್ತಿಸಾಲ mortgage
सावधि जमा योजना	സ്ഥിരനിക്ഷേപം *வைப்புநிதி* ಸ್ಥಿರನಿಕ್ಷೇಪ fixed deposit
सूद	പലിശ வட்டி ಬಡ್ಡಿ interest
सौदा	व्यापार

इकाई – 5

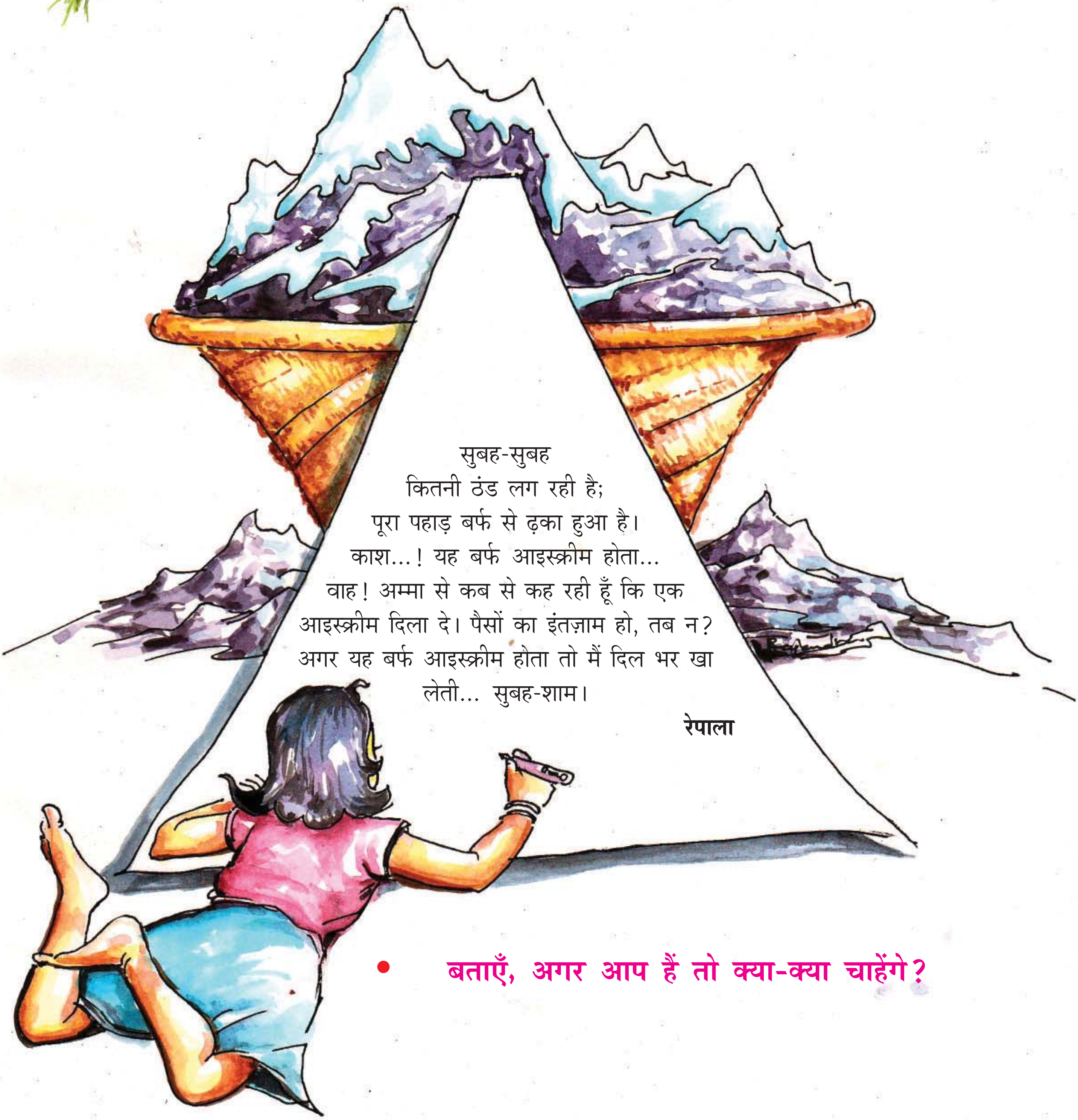

सुबह-सुबह
कितनी ठंड लग रही है;
पूरा पहाड़ बर्फ से ढ़का हुआ है।
काश...! यह बर्फ आइस्क्रीम होता...
वाह! अम्मा से कब से कह रही हूँ कि एक
आइस्क्रीम दिला दे। पैसों का इंतज़ाम हो, तब न?
अगर यह बर्फ आइस्क्रीम होता तो मैं दिल भर खा
लेती... सुबह-शाम।

रेपाला

- **बताएँ, अगर आप हैं तो क्या-क्या चाहेंगे?**

कहानी

सफ़ेद गुड़

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

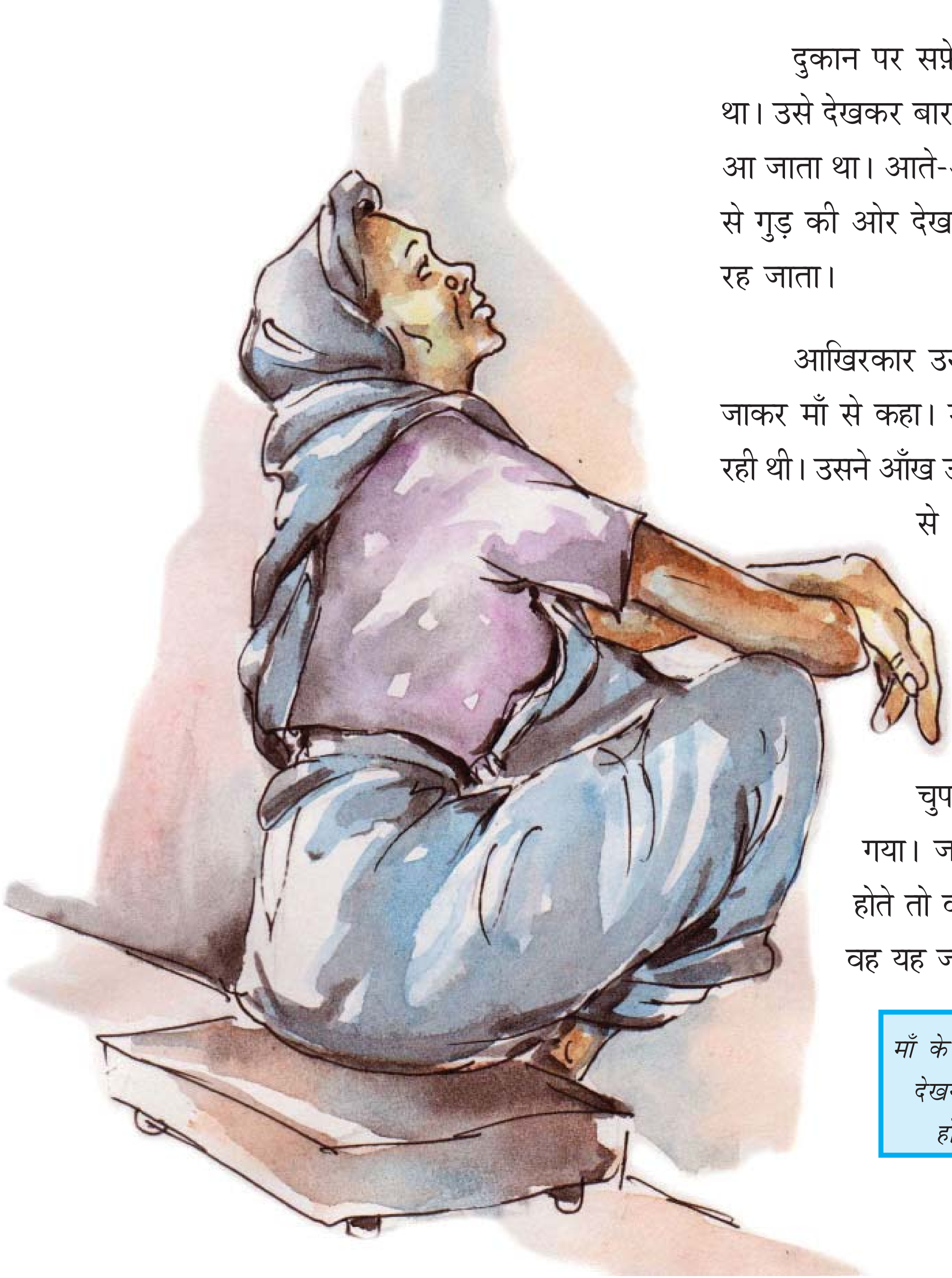

दुकान पर सफ़ेद गुड़ रखा था। दुर्लभ था। उसे देखकर बार-बार उसके मुँह से पानी आ जाता था। आते-आते वह ललचाई नज़रों से गुड़ की ओर देखता, फिर मन मसोसकर रह जाता।

आखिरकार उसने हिम्मत की और घर जाकर माँ से कहा। माँ बैठी फटे कपड़े सिल रही थी। उसने आँख उठाकर कुछ देर दीन दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर ऊपर आसमान की ओर देखने लगी और बड़ी देर तक देखती रही। बोली कुछ नहीं। वह चुपचाप माँ के पास से चला गया। जब माँ के पास पैसे नहीं होते तो वह इसी तरह देखती थी। वह यह जानता था।

माँ के आसमान की ओर देखने का क्या कारण होगा?

वह बहुत देर गुमसुम बैठा रहा, उसे अपने वे साथी याद आ रहे थे जो उसे चिढ़-चिढ़ाकर गुड़ खा रहे थे। ज्यों-ज्यों उसे उनकी याद आती, उसके भीतर गुड़ खाने की लालसा और तेज़ होती जाती। एकाध बार उसके मन में माँ के बटुए से पैसे चुराने का भी ख्याल आया। यह ख़्याल आते ही वह अपने को धिक्कारने लगा और इस बुरे ख़्याल के लिए ईश्वर से क्षमा माँगने लगा।

> *'वह अपने को धिक्कारने लगा और इस बुरे ख्याल के लिए ईश्वर से क्षमा माँगने लगा।' –यहाँ लड़के का कौन-सा मनोभाव प्रकट है?*

उसकी उम्र ग्यारह साल की थी। घर में माँ के सिवा कोई नहीं था। हालाँकि माँ कहती थी कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ ईश्वर है। वह चूँकि माँ का कहना मानता था इसलिए उसकी यह बात भी मान लेता था। लेकिन ईश्वर के होने का उसे पता नहीं चलता था। माँ उसे तरह-तरह से ईश्वर के होने का यकीन दिलाती। जब वह बीमार होती, तकलीफ़ में कराहती तो ईश्वर का नाम लेती और जब अच्छी हो जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देती। दोनों घंटों आँख बंद कर बैठते। बिना पूजा किए हुए वे खाना नहीं खाते। वह रोज़ सुबह-शाम अपनी छोटी-सी घंटी लेकर, पालथी मारकर संध्या करता। उसे संध्या के सारे मंत्र याद थे, उस समय से ही जब उसकी जबान तोतली थी। अब तो वह साफ़ बोलने लगा था।

वे एक छोटे-से कस्बे में रहते थे। माँ एक स्कूल में अध्यापिका थी। बचपन से ही वह ऐसी कहानियाँ माँ के मुँह से सुनता था जिनमें यह बताया जाता था कि ईश्वर अपने भक्तों का कितना ख़्याल रखता है। और हर बार ऐसी कहानी सुनकर वह ईश्वर का सच्चा भक्त बनने की इच्छा से भर जाता। दूसरे भी उसके पीठ ठोंकते, और कहते, "बड़ा शरीफ़ लड़का है। ईश्वर इसकी मदद करेगा।" वह भी मानता कि ईश्वर उसकी मदद करेगा। लेकिन कभी इसका कोई सबूत उसे नहीं मिला था।

उस दिन जब वह सफ़ेद गुड़ खाने के लिए बेचैन था तब उसे ईश्वर याद आया। उसने खुद को धिक्कारा, उसे माँ से पैसे माँगकर माँ को दुखी नहीं करना चाहिए था। ईश्वर किस दिन के लिए है? ईश्वर का ख़्याल आते ही वह खुश हो गया। उसके अंदर एक विचित्र-सा उत्साह आ गया। क्योंकि वह जानता था कि ईश्वर सबसे अधिक ताकतवर है। वह सब जगह है और सब कुछ कर सकता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके। तो क्या वह थोड़ा-सा गुड़ नहीं दिला सकता? उसे जो कि बचपन से ही उसे पूजा करता आ रहा है और जिसने कभी कोई बुरा काम नहीं किया। कभी चोरी नहीं की, किसी को सताया नहीं। उसने सोचा और इस भाव से भर उठा कि ईश्वर ज़रूर उसे गुड़ देगा।

वह तेज़ी से उठा और घर के अकेले कोने में पूजा करने बैठ गया। तभी माँ ने आवाज़ दी, “बेटा, पूजा से उठने के बाद बाज़ार से नमक ले आना।”

उसे लगा जैसे ईश्वर ने उसकी पुकार सुन ली है। वरना पूजा पर बैठते ही माँ उसे बाज़ार जाने को क्यों कहती। उसने ध्यान लगाकर पूजा की, फिर पैसे और झोला लेकर बाज़ार की ओर चल दिया।

घर से निकलते ही उसे खेत पार करने पड़ते थे, फिर गाँव की गली जो ईंटों की बनी हुई थी, फिर बाज़ार की सड़क आती थी।

उस समय शाम हो गई थी। सूरज डूब रहा था। वह खेतों में चला जा रहा था आँखें आधी बंद किए, ईश्वर पर ध्यान लगाए और संध्या के मंत्रों को बार-बार दोहराते हुए। उसे याद नहीं उसने कितनी देर में खेत पार किए, लेकिन जब वह गाँव की ईंटों की गली में आया तब सूरज डूब चुका था और अँधेरा छाने लगा था। लोग अपने-अपने घरों में थे। धुआँ उठ रहा था। चौपाए खामोश पड़े थे। नीम सर्दी के दिन थे।

उसने पूरी आँख खोलकर बाहर का कुछ भी देखने की कोशिश नहीं की। वह अपने भीतर देख रहा था जहाँ गहरे अँधेरे में झिलमिलाता प्रकाश था। ईश्वर का प्रकाश और उस प्रकाश के आगे वह आँखें बंद किए मंत्रपाठ कर रहा था।

अचानक उसे अज़ान की आवाज़ सुनाई दी। गाँव के सिरे पर एक छोटी-सी मस्जिद थी। उसने थोड़ी-सी आँखें खोलकर देखा। अँधेरा काफ़ी गाढ़ा हो गया था। मस्जिद के एक कमरे बराबर दालान में लोग नमाज़ के लिए इकट्ठे होने लगे थे। उसके भीतर एक लहर-सी आई। उसके पैर ठिठक गए। आँखें पूरी बंद हो गईं। वह मन ही मन कह उठा, “ईश्वर यदि तुम हो और मैंने सच्चे मन से तुम्हारी पूजा की है तो मुझे पैसे दो, यहीं इस वक्त।”

वह वहीं गली में बैठ गया। उसने ज़मीन पर हाथ रखा। ज़मीन ठंडी थी। हाथों के नीचे कुछ चिकना-सा महसूस हुआ। उल्लास की बिजली-सी उसके शरीर में दौड़ गई। उसने आँखें खोलकर देखा। अँधेरे में उसकी हथेली में एक अठन्नी दमक रही थी। वह मन ही मन ईश्वर के चरणों में लोट गया। खुशी के समुद्र में झूलने लगा। उसने उस अठन्नी को बार-बार निहारा, चूमा, माथे से लगाया। क्योंकि वह एक अठन्नी ही नहीं थी। उस गरीब पर ईश्वर की कृपा थी। उसकी सारी पूजा और सच्चाई का ईश्वर की ओर से इनाम था।

'वह एक अठन्नी ही नहीं थी, उस गरीब पर ईश्वर की कृपा थी।' –ऐसा क्यों कहा है?

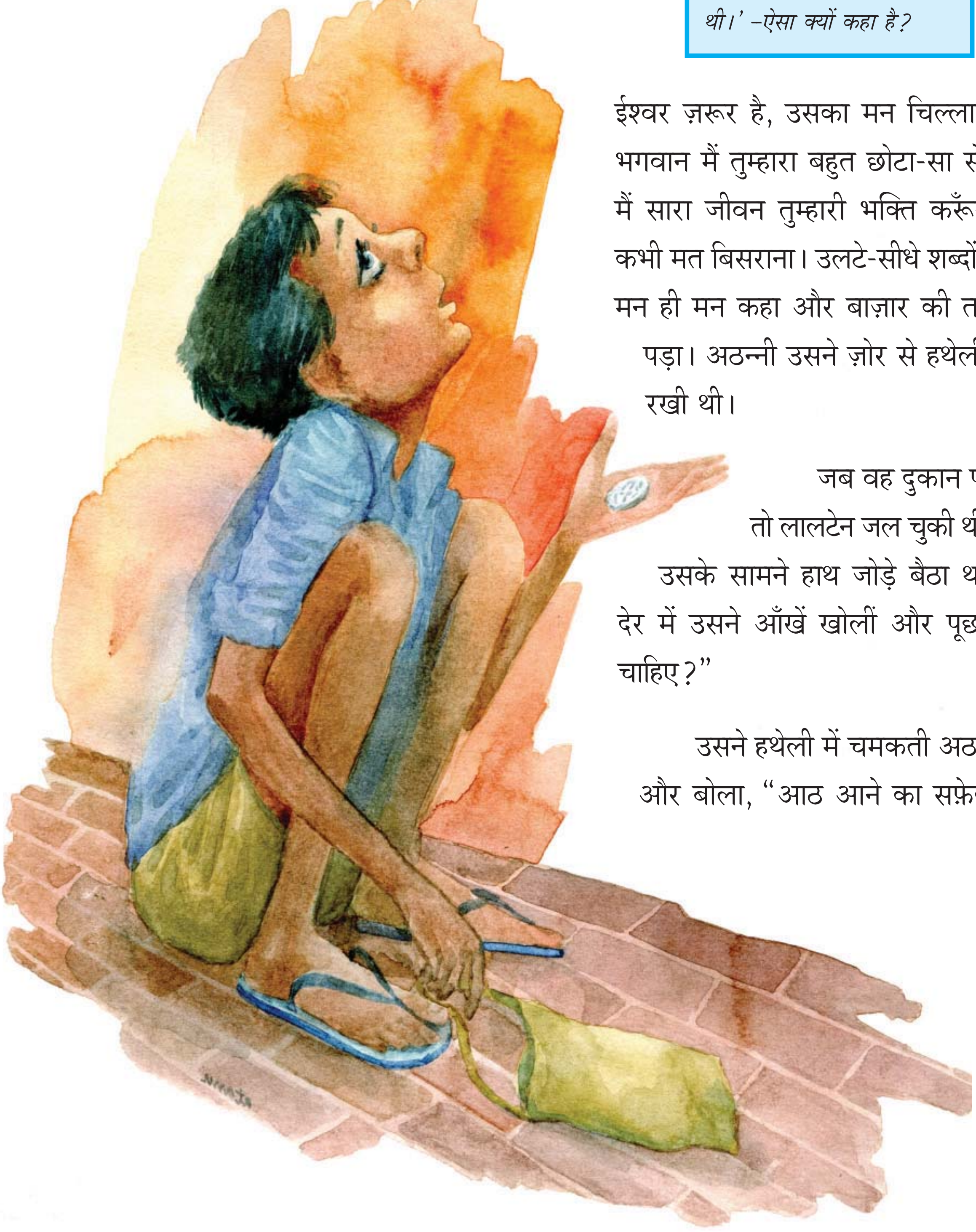

ईश्वर ज़रूर है, उसका मन चिल्लाने लगा। भगवान मैं तुम्हारा बहुत छोटा-सा सेवक हूँ। मैं सारा जीवन तुम्हारी भक्ति करूँगा। मुझे कभी मत बिसराना। उलटे-सीधे शब्दों में उसने मन ही मन कहा और बाज़ार की तरफ़ दौड़ पड़ा। अठन्नी उसने ज़ोर से हथेली में दबा रखी थी।

जब वह दुकान पर पहुँचा तो लालटेन जल चुकी थी। पंसारी उसके सामने हाथ जोड़े बैठा था। थोड़ी देर में उसने आँखें खोलीं और पूछा, "क्या चाहिए?"

उसने हथेली में चमकती अठन्नी देखी और बोला, "आठ आने का सफ़ेद गुड़।"

यह कहकर उसने गर्व से अठन्नी पंसारी की तरफ़ गद्‌दी पर फेंकी। पर वह गद्‌दी पर न गिर उसके सामने रखे धनिए के डिब्बे में गिर गई। पंसारी ने उसे डिब्बे में टटोला पर उसमें अठन्नी नहीं मिली। एक छोटा-सा खपड़ा (चिकना पत्थर) ज़रूर था जिसे पंसारी ने निकाल कर फेंक दिया।

उसका चेहरा एक दम से काला पड़ गया। सिर घूम गया। जैसे शरीर का सारा खून निकल गया हो। आँखें छलछला आईं।

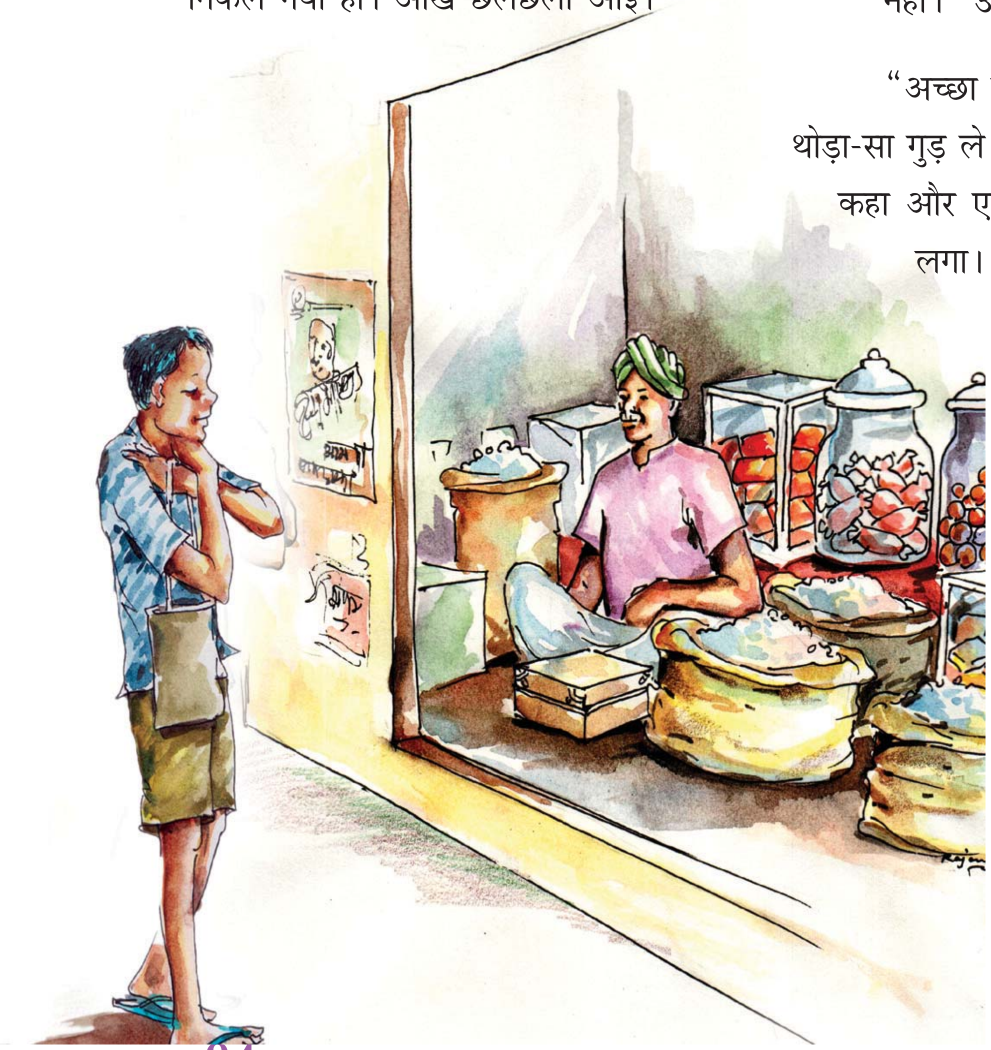

"कहाँ गई अठन्नी!" पंसारी ने भी हैरत से कहा।

उसे लगा जैसे वह रो पड़ेगा। देखते-देखते सबसे ताकतवर ईश्वर की उसके सामने मौत हो गई थी। उसने मरे हाथों से जेब से पैसे निकाले, नमक लिया और जाने लगा।

दुकानदार ने उसे उदास देखकर कहा, "गुड़ ले लो, पैसे फिर आ जाएँगे।"

"नहीं।" उसने कहा और रो पड़ा।

"अच्छा पैसे मत देना। मेरी ओर से थोड़ा-सा गुड़ ले लो।" दुकानदार ने प्यार से कहा और एक टुकड़ा तोड़कर उसे देने लगा। उसने मुँह फिरा लिया और चल दिया। उसने ईश्वर से माँगा था, दुकानदार से नहीं। दूसरों की दया उसे नहीं चाहिए।

लेकिन अब वह ईश्वर से कुछ नहीं माँगता।

• निम्नलिखित वाक्य पर ध्यान दें–

माँ बैठी फटे कपड़े सिल रही थी।

बताएँ, रेखांकित शब्दों में क्या संबंध है?

• इस प्रकार आपसी संबंध रखनेवाले शब्द पाठ से चुनकर लिखें।

विशेषण	संज्ञा
फटे	कपड़े
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

- **लड़के की गुड़ खाने की इच्छा सफल नहीं हुई। उसके विचारों को डायरी के रूप में लिखें।**

मेरी रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।

	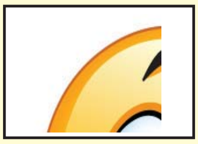	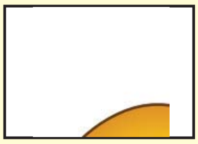	
तारीख लिखी है।			
मुख्य घटनाओं का उल्लेख किया है।			
घटनाओं पर अपने विचार लिखा है।			
डायरी की शैली है।			

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना *मूलतः कवि एवं साहित्यकार थे। 'दिनमान' पत्रिका का कार्यभार संभालते हुए आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना योगदान दिया। आपका जन्म 15 सितंबर 1927 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ। इलाहाबाद से आपने बी.ए और एम.ए की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। 'काठ की घंटियाँ', 'कोई मेरे साथ चलें', 'अंधेरा पर अंधेरा', 'बकरी', 'अब गरीबी हटाओ', 'कुछ रंग कुछ गंध' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

साक्षात्कार

खूबसूरत अनुभूति है एवरेस्ट!

संतोष यादव से मनीष कुमार सिन्हा की बातचीत

माउंट एवरेस्ट की चोटी पर दो बार पहुँचनेवाली भारत की पहली महिला पर्वतारोही संतोष यादव का बचपन अन्य बच्चों की तुलना में कुछ हटकर रहा। बचपन से ही वह निड़र रही। किसी भी चीज़ को जानने की उनकी जिज्ञासा हमेशा उनके अंदर बलवती रहती और बर्फ़ से ढकी चोटियों को समझने की जिज्ञासा ने उन्हें एक दिन माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचा दिया।

आपका बचपन कैसा रहा?

बहुत शरारती थी लेकिन फिर अचानक शांत हो गई। पिताजी के आर्मी में होने के कारण मेरा ज़्यादातर बचपन दादी के साथ बीता। और मैं अपनी दादी की लाड़ली थी। पाँच भाइयों के बीच अकेली होने के कारण मुझे अपने भाइयों का भी भरपूर प्यार मिला और पूरे घर की मैं चहेती थी। आज मुझे महसूस होता है कि जिस बच्चे को घर में अच्छा प्यार मिलता है, वह किसी भी क्षेत्र में अच्छा कर सकता है।

पढ़ाई-लिखाई कैसी रही?

दो कमरों का मेरा स्कूल था और मेरी कक्षा में सिर्फ़ चार बच्चे थे। बैठने के लिए घर से बोरी लेकर जाते थे और कभी बरसात हो जाती तो उसे ही ओढ़ लेते थे। पाँचवीं कक्षा तक मैंने गाँव के स्कूल में ही पढ़ाई की। फिर मैं नज़दीक के ही कस्बे में जाने लगी। वहाँ

मैंने आठवीं तक की पढ़ाई की और दिल्ली आ गई। 14 वर्ष की उम्र से ही शादी करने का दबाव दिया जाने लगा जिससे बचने के लिए मैं अपने माता-पिता से दूर हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करने लगी।

हिमालय पर चढ़ने की प्रेरणा कब और कैसे मिली?

मैं बचपन से ही बहुत जिज्ञासु थी और यही जिज्ञासा मेरी प्रेरणा बनी। बर्फ़ से ढके पहाड़ों पर चढ़ने की जिज्ञासा बहुत पहले से ही थी। कॉलेज के दौरान एक प्रशिक्षण शिविर में जब हिमालय देखने गई तब ही मुझे यह संयोग प्राप्त हुआ।

ज़िंदगी में जिज्ञासा की क्या अहमियत है?

क्या परिवार की तरफ़ से कोई अड़चन हुई?

पिताजी ने अचंभे में पड़ गए कि यह कौन-सा भूत सवार हो गया। परिवार के लोग सोचने लगे कि यदि हाथ-पैर टूट गया तो शादी कैसे होगी? गाँव के लोग क्या कहेंगे? लेकिन मेरी ज़िद के कारण अंत में उन्हें मानना पड़ा।

माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ने की अनुभूति हमें बताएँ।

बहुत ही अलग था। जब मैं टोप पर पहुँची तो भावात्मक रूप से मैं शून्य हो गई

संतोष यादव
बजेंद्रपाल के साथ।

थी। न किसी प्रकार की खुशी थी और न ही कोई ग़म। वॉकी-टॉकी फोन के ज़रिए मुझे सूचना दी गई कि मैं एवरस्ट पर पहुँच गई हूँ। जब मैं दो-चार कदम पीछे थी तभी मेरी आत्मा ने कहा कि यह मैं क्या करने जा रही हूँ।

कितना डर लगा? किस तरह के जीव-जंतु देखने को मिले?

कोई डर नहीं लगा। कभी-कभी सुनने को मिलता था कि कैंप में स्नो बियर आया था। लेकिन मेरे सामने एक बार भी नहीं हुआ। स्नो लेपेर्ड, माउंटन गोट जिसे बरल कहा जाता है देखने को मिला।

एक सफल पर्वतारोही होने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है?

यह न सिर्फ़ एक पर्वतारोही के लिए, बल्कि हर एक अच्छे इंसान के लिए ज़रूरी होता है कि वह संतुलित दिमागवाला और संयमवाला हो। इंसान का यह गुण उसे हर स्थिति में अच्छा काम करने में मददगार होता है। किसी भी परिस्थिति में आप अपने आपको ढाल सकते हैं। यही गुण

> *'संतुलित दिमाग और संयम अच्छे इंसान के लिए ज़रूरी है।' –इस विचार पर आपकी राय क्या है?*

काफ़ी होता है बाकी सभी गुण भी इसीसे जुड़े होते हैं।

अब आपका अगला लक्ष्य क्या है? अगर मौका मिले तो फिर वहाँ जाना चाहेंगी?

मेरे लिए जो अनुभव था उसे मैंने प्राप्त कर लिया। अब मेरी कल्पना समाज को खुश देखना है। लक्ष्य यही है कि सभी के चेहरे पर खुशी दिखे और यह धरती स्वर्ग कहलाए।

> *समाज को खुश देखने की कल्पना के पीछे संतोष यादव के चरित्र की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?*

- **संतोष यादव दो बार माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाली भारत की पहली महिला है। दूसरी बार उनके एवरेस्ट जीतने के संबंध में एक रपट तैयार करें।**

दोस्त की रचना में

उचित चौकोर में ☑ लगाएँ।			
घटना का वर्णन है।			
वस्तुनिष्ठता है।			
आकर्षक शीर्षक है।			

***संतोष यादव** भारत की एक पर्वतारोही है। आप माउंट एवरेस्ट पर दो बार चढ़नेवाली विश्व की प्रथम महिला है। पहले आपने मई 1992 में और उसके बाद मई 1993 में एवरेस्ट पर चढ़ाई करने में सफलता प्राप्त की। आपका जन्म जनवरी 1969 में हरियाणा के रेवाड़ी जिले में हुआ था। आपने महारानी कॉलेज जयपुर से शिक्षा प्राप्त की। संप्रति आप भारत-तिब्बत सीमा पुलिस में पुलिस अधिकारी है। आपको 2000 में 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।*

यह भी पढ़ें...

गीत

वह सुबह कभी तो आएगी

साहिर लुधियानवी

वह सुबह कभी तो आएगी
इन काली सदियों के सर से
जब रात का आँचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे
जब सुख का सागर छलकेगा
जब अंबर झूम के नाचेगा
जब धरती नगमे गाएगी

वह सुबह कभी तो आएगी
बीतेंगे कभी तो दिन आखिर
ये भूख के और बेकारी के
टूटेंगे कभी तो दिन आखिर
दौलत-ओ-इज़ारेदारी के
जब अनोखी दुनिया की
बुनियाद उठाई जाएगी
वह सुबह कभी तो आएगी

संसार के सारे मेहनतकश
खेतों से मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इंसान
तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अमन, खुशहाली के
फूलों से सजाई जाएगी
वह सुबह कभी तो आएगी।

- **गीत का आलाप करें।**
- **गीत का दृश्याभास करें।**

साहिर लुधियानवी *का जन्म 8 मार्च 1921 में लुधियाना में हुआ। आप प्रसिद्ध शायर तथा गीतकार थे। आपकी शिक्षा लुधियाना के खालसा हाइस्कूल में हुई। लाहौर तथा मुंबई आपकी कर्मभूमि रही। 'तल्खियाँ' आपका पहला कविता संग्रह है। 'आज़ादी की राह पर' नामक फ़िल्म के लिए आपने पहली बार गीत लिखे। 25 अक्तूबर 1980 को दिल का दौरा पड़ने से आपका निधन हो गया।*

अधिगम उपलब्धियाँ

- कहानी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- डायरी लिखता है।
- साक्षात्कार पढ़कर विश्लेषणात्मक प्रश्नों पर प्रतिक्रिया करता है।
- रपट तैयार करता है।
- गीत का दृश्याभास करता है।

मदद लें...

अचंभे में	आश्चर्य में
अज़ान	ബാങ്ക് വിളി பாங்கு கூப்பிடுதல் ಬಾಂಗ್ calling from the mosque
अठन्नी	आठ आना (पचास पैसे)
अमन	शांति
आँचल	അഗ്രം சேலை முந்தானை ಕರೆ the boarder
इज़ारेदारी	കുത്തക தனியுரிமை ಏಕಸ್ವಾಮಿತ್ವ monopoly
ईंट	ഇഷ്ടിക செங்கல் ಇಟ್ಟಿಗೆ brick
कस्बा	क्षेत्र
खामोश	मौन
खुशहाली	സമ്പൽസമൃദ്ധി செல்வ செழிப்புடன் வாழ்தல் ಸಮೃದ್ಧಿ prosparity
चहेती	लाड़ली
चौपाया	കന്നുകാലി கால்நடைகள் ಜಾನುವಾರು cattle
छलकेगा	തുളുമ്പും துளும்பும் ತುಳುಕುವುದು may spill
छाने लगा	പരക്കാൻ തുടങ്ങി பரவ துவங்கிய ವ್ಯಾಪಿಸು
ज़िद	हठ
झोला	സഞ്ചി பை ಸಂಚಿ bag
टटोला	തപ്പിനോക്കി தேடிப்பார்த்து ಹುಡುಕಿನೋಡು searched

ताकतवर	ശക്തനായ வலுவான ಶಕ್ತನಾದ mighty
तोतली	കൊഞ്ചുന്ന கொஞ்சுகின்ற ತೊದಲುನುಡಿ lisping
दौलत	धन
धनिया	കൊത്തമല്ലി மல்லி இலை ಕೊತ್ತಂಬರಿ coriander
धिक्कारने लगा	കുറ്റപ്പെടുത്താൻ തുടങ്ങി குறை கூற துவங்குதல் ಆರೋಪಿಸು
नगमा	മധുര ശബ്ദം இனிமையான குரல் ಮಧುರ ಸ್ವರ sweet voice
निडर	निर्भय
नीम सर्दी	മരം കോച്ചുന്ന തണുപ്പ് *நடுங்கவைக்கும் குளிர்* ಮರಗಟ್ಟುವ ಚಳಿ shivering cold
पंसारी	പലവ്യഞ്ജനക്കച്ചവടക്കാരൻ மளிகை வியாபாரி ಜೀನಸು ವ್ಯಾಪಾರಿ a grocer
पालथी मारकर	ചമ്രംപടിഞ്ഞിരുന്ന് சம்மணம் படிந்திருத்தல் ಕಾಲುಮಡಚಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳು ...
पिघलेंगे	ഉരുകും உருகும் ಕರಗಬಹುದು may melt
पीठ ठोंकते	പുറത്ത് തട്ടികൊണ്ട് முதுகில் தட்டிக்கொண்டு ತಟ್ಟುವುದು by patting
प्रशिक्षण शिबिर	training camp
बटुआ	പണസഞ്ചി பணப்பை ಸಂಚಿ purse
बेकारी	തൊഴിലില്ലായ്മ வேலையில்லாமை ನಿರುದ್ಯೋಗ unemployment
बेचैन	व्याकुल
बेदर	मूल्यहीन

बेबस	विवश
बोरी	small sack
मददगार	helper
मन मसोसकर	വേദന കടിച്ചമർത്തി வேதனையை சகித்து இருக்கும் ನೋವುಸಹಿಸಿಕೊಂಡು
रह जाता	കഴിഞ്ഞുകൂടും
माथे से लगाया	നെറ്റിയിൽ തൊട്ടു நெற்றியில் தொட்டு ಹಣೆಮುಟ್ಟಿ ನಮಸ್ಕರಿಸು
शरारती	naughty
सफेद गुड़	വെള്ളച്ചക്കര கல்கண்டு
सबूत	തെളിവ് தடயம், சாட்சி ಆಧಾರ evidence
हथेली	ഉള്ളംകൈ உள்ளங்கை ಅಂಗೈ palm
हैरत	ആശ്ചര്യം அற்புதம் ಆಶ್ಚರ್ಯ wonder